

गंगाभरण ।

कविवर लेखराज जी विरचित.

गंगाभरण।

जिसको

गन्धौली ग्राम निवासी पं० नन्दकिशोर मिश्र उपनाम "लेखराज" जी ने भाषा-काव्य-प्रेमी और गंगा-भक्तों के हेत बनाया।

तथा

कृष्णविहारी मिश्र ने प्रकाशित किया।

प्रथमावृत्ति ५००   मूल्य ।=)

Printed by U. C. Banerji at the Anglo-Oriental Press, Lucknow.



भूमिका ।

आज मैं अपने पूज्य पितामह श्रीमान् 'महाराज' नन्दकिशोरजी मिश्र उपनाम लेखराजजी रचित गंगाभरण पुस्तक को लेकर आप लोगों की सेवामें उपस्थित होताहूं, और आशा करता हूं कि गुणदूषण शोध आप मेरे इस उपहार को अवश्य स्वीकार करेंगे । इसी से मैं अपने परिश्रम को सफल समझूंगा । इस पुस्तक की रचना जैसा कि इस के अन्त में दिया है सम्वत् १९३५ में हुई थी, यथाः—

गंगेशानन गंग मग, निधि दीन्हे शशि गंग ।
गंगागति गनि अंक की, सम्वत लिखहु सुढंग ॥

गंगेशानन महादेव पंचवक्र प्रसिद्ध हैं, गंग मग अर्थात् गंगाजी त्रिपथगामिनी हैं, निधि नव हैं और शशि एक है इस प्रकार ५३९१ हुआ परन्तु आगे कहते हैं कि गंगा गति गनि

अर्थात् गंगा की गति सीधी नहीं है यहां उल्टी से अभिप्राय है अंक गणना में नियम भी है 'अङ्कानां वामतो गतिः' अतः ५३९१ की गणना वाम ओर से होगी इसी कारण १९३५ हुआ यही पुस्तक रचना का सम्वत् है। इस प्रकार यह पुस्तक आज से ३३ वर्ष पूर्व बन चुकी थी परन्तु तब से अनेक बार उद्योग करने पर भी पुस्तक प्रकाशित न होसकी, कहा भी है 'श्रेयांसि बहु विघ्नानि' जो हो इधर भाषा-साहित्य में लोगों का अनुराग बढ़ते देख चित्त को उत्कट अभिलाषा हुई कि इन को कोई पुस्तक भेंट करना चाहिये तदनुसार आज यह 'गंगाभरण' उपहार स्वरूप सम्मुख उपस्थित है इसकी स्वीकृति से न मैं केवल भाषा-प्रेमियों का कृतकृत्य होऊंगा वरन् प्रोत्साहित होकर उनकी सेवा में अन्य पुस्तकें भेंट करते रहने का उद्योग करूंगा। गंगाभरण नाम के गंगा और आभरण दोनों ही शब्द महत्वपूर्ण हैं। गंगा शब्द के सुनने से चित्त में एक अद्भुत भाव का संचार होता है। जिन भगवती भागीरथी का यश गान ऋग्वेद तक में उल्लिखित है मानो उन्हीं का कलकल निनाद कर्णकुहरों में प्रविष्ट होने लगता है एक बार वैदिक समय का दर्शन अन्तर चक्षु को फिर होता है। एकबार तपश्चर्या में लीन ऋषियों की पंक्तियां गंगा तट पर स्थित हैं ऐसा फिर भासित होने लगता है। एकबार मनु, भरत, बाल्मीकि, कणादि, व्यास, विश्वामित्र, कात्यायन, वशिष्ठ आदि के स्मरण से शरीर पुनः पुलकित हो उठता है। भारत का पूर्व गौरव स्मरण करके स्वाभिमान वश एकबार फिर नाड़ियों का रक्त बड़े वेग से प्रवाहित हो उठता है, ९ जुलाई के अभ्युदय में ठीक ही लिखा है कि "आज के दिन हिन्दुओं का भारत वर्ष में क्या है जिसको देखकर वह अपना सर उठावें। या तो

संसार शिखर हिमालय और आकाशवाहिनी गंगा, या हमारे अनादि और अनन्त वेद—यही हिन्दुओं के ईश्वर दत्त पदार्थ आज भी अपना सर ऊँचा किये हुये हैं इन को छोड़कर आज भी कोई दूसरी वस्तु है जिस से हमारा मान हो जिसका हम को अभिमान हो" हम इसके विषय में कहांतक लिखें किसी कवि ने उचित ही कहा है—

यद्यपि दिशि दिशि सरितः परितः परिपूरिताम्भसः सन्ति ।
तदपि पुरन्दर तरुणी संगति सुखदायिनी गंगा ॥

पुराणों में तो इसकी यहां तक महिमा वर्णित है:—

कृतेतु सर्व तीर्थानि त्रेतायां पुष्करं परम ।
द्वापरेतु कुरुक्षेत्रं कलौगंगा विशिष्यते ॥

निदान यदि हम गंगाजी की प्राकृतिक छटा तथा उनके द्वारा भारत के जो उपकार हुये हैं उनका विचार करने लगें तो एक वृहदाकार पुस्तक तैयार हो जावैगी । अब आभरण शब्द को लीजिये, सौन्दर्य्य-वर्धन तथा कुरूपता गोपनार्थ ही आभरणों की सृष्टि हुई है । आभरणों से युक्त कुरूपता बहुत कुछ छिप जाती है फिर जो सहजही में सुन्दर है वह आभरणों के साथ कैसा भला लगैगा इसके विषय में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है । निदान आभरणों के संयोग से गंगा जी की शोभा कितनी बढ़ सकी है—इसका पाठक स्वयं अनुमान करलें । जिन आभूषणों के प्रभाव से भगवती भारती जगमगा उठती हैं उनकी शोभा वर्णनातीत होजाती है उन आभरणों से गंगा जी अलंकृत की गई हैं उस से उनकी शोभा कितनी बढ़ी है इस का निर्णय समायिक विद्वान गण करेंगे प्रसिद्ध

कवि जयदेव जी इन अलंकारों के विषय में अपने चन्द्रलोक में कहते हैं:—

शब्दार्थयोः प्रसिद्ध्यात्रा कवेः प्रौढ़िवशेनवा ।
हारादिवदलंकार सन्निवेशो मनोहरः ॥

निदान गंगाभरण में भाषा-काव्य के अलंकार विषय का वर्णन है प्रत्येक अलंकार गंगा जी ही पर घटाया गया है यही इस ग्रन्थ में विशेषता है । अन्य २ कवियोंने भी इस विषय पर नाना भांति के सुन्दर ग्रन्थ कहे हैं पर उन में से अधिकांश निम्न लिखित उपालम्भ के भागी बने हैं ।

कविभिर्नृपसेवासु वित्तालंकार हारिणी ।
वाणीवेश्येवलोभेन परोपकारिणीकृता ॥

परन्तु गंगाभरण में एक ओर कविता का रसास्वादन तथा दूसरी ओर भारत मुखोज्वल कारिणी भगवती भागीरथी का पवित्र गुणगान है । प्राकृतिक छटा और गंगा सम्बन्धी पौराणिक कथाओं का अभास ग्रन्थ में किस प्रकार दिया गया है उसे आपलोग स्वयं पढ़ने पर जान लेगें । हम इतना अवश्य सूचित किये देते हैं कि ग्रन्थ-कर्ता गंगाजी के महान भक्त थे उन का जीवन चरित्र पढ़ने से यह बात सम्यक प्रकट होजावैगी । इस ग्रन्थ के कुछ छन्द संस्कृत श्लोकों के स्वतंत्र अनुवाद भी हैं उदाहरणार्थ एक छन्द लिखा जाता है ।

प्रभातेस्नातीनां नृपति रमणीनां कुचतटी ।
गतोयावन्मातर्मिलित तव तोयैर्मृगमदः ॥
मृगास्तात्रद्वै मानिक शतसहस्रैः परिवृताः ।
विशन्ति स्वच्छन्दं विमल वपुषोनन्दनवनम् ॥

गंगाभरण द्वितीय अर्थान्तरन्यास ।

राजनकी रमनी कमनी निसि में कुचपै मद एन सरै लगीं ।
प्रेम उमंग सों गंग तरंग में अंगन ते अँगराग हरै लगीं ॥
नीर को पर्स भयो मद जो लेखराज त्यों रूप अनूप धरैलगीं ।
तेई मृगान की श्रेणी सुछन्द अनन्द सों नन्दनजाय चरैलगीं ।

ग्रन्थ की भाषा के विषय में यही कहना है कि इसकी भाषा वही है जो अधिकांश प्राचीन हिन्दी भाषा के कवियों की रही है । अन्य भाषाओं के शब्द जैसे बगौर, तनहा आदि काभी प्रयोग कहीं २ पर किया गया है । अनुप्रास आदि के कारण बहुत स्थलों में 'श' के स्थान में 'स' जानबूझ कर रक्खा गया है इसी प्रकार खगेश के स्थान में खगीश तथा मुनीश के स्थान में मुनेश भी कहीं २ पर आया है वास्तव में यह Poetic licence (जो स्वतंत्रता कवियों को शब्द परिवर्तन में प्राप्त है) का एक उदाहरण मात्र है । गंगाभरण की काव्य कैसी है इसके विषय में हम कुछ भी नहीं कह सक्ते हैं और निम्नलिखित श्लोकों ही पर सन्तोष करते हैं ।

(१) अपूर्वोभातिभारत्याः काव्यामृत फलेरसः ।
चर्वणे सर्व सामान्ये स्वादुविक्केवलं कविः ॥

(२) जानातिहि पुनः सम्यक् कवि रेव कवेः श्रमम् ।

(३) कवयः परितुष्यन्ति ने तरे कविसूक्तिभिः ।

(४) कवितायाः परिपाकाननुभव रसिको विजानाति ।

ग्रन्थ में कठिन शब्दों पर टिप्पणी देने का भी विचार था परन्तु समयाभाव के कारण तथा इस विचार से कि कहीं इसके मुद्रित होने में विशेष विलम्ब न हो ऐसा नहीं कियागया यदि इसके पुनः मुद्रित होने का सौभाग्य प्राप्त होगा तो एक सर्वांग पूर्ण संस्करण प्रकाशित किया जावैगा।

गन्धौली,
२४ जुलाई १९११ ई०

लेखराज जी का
प्रतिगन्द पौत्र,
कृष्ण बिहारी मिश्र.



लेखराज मिश्रका संक्षिप्त जीवनचरित्र।

हर्दोई जिले के अन्तर्गत भगवन्तनगर कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की एक प्राचीन बस्ती है। मांझ गांव के मिश्रों ही की संख्या उक्त नगर में विशेष है। देवमणि के आंक में सांवले कृष्ण जी उक्त स्थान में बहुत प्रसिद्ध हुये। इन महाराज के छः पुत्र थे जिनमें से सबसे बड़े का नाम कुंजविहारी जी था। आप के पुत्र गयाप्रसाद या मुरलीधर जी भगवन्तनगर छोड़ लखनऊ में जयराम चकलेदार के यहां रहने लगे। धीरे धीरे घर गृहस्थी आदि सब यहीं लखनऊ में उठ आया यहीं संवत् १८८८ वैशाख कृष्ण अमावस्या रविवार को कुंजविहारी जी के पौत्र तथा गयाप्रसाद मुरलीधर जी के पुत्र का जन्म हुआ जिनका कि नाम नंदकिशोर जी रक्खा गया। इस गंगाभरण ग्रन्थ के रचयिता यही महाराज थे। काव्य में इन्हों ने अपना नाम लेखराज रक्खा था। जयराम चकलेदार ने अपनी मृत्यु का समय निकट जान लेखराज जी को अपनी सम्पत्ति का एक मात्र अधिकारी बनाया। इस प्रकार लेखराज जी लखनऊ में स्थित उनके घर तथा विपुल सम्पत्ति के अधिकारी हुये, यही नहीं जिला सीतापुर के अन्तर्गत गन्धौली आदि अनेक ग्रामों के भी आप मालिक बने। आप का बाल्यकाल लखनऊ ही में व्यतीत हुआ उस समय अर्बी, फ़ारसी, संस्कृत तथा महाजनी भाषाओं ही का पूर्ण प्रचार था अतः इनको भी इसी में शिक्षा दी गई १५ या १६ वर्ष ही की अवस्था में इन्हों ने इन विद्याओं में अच्छी सुख्याति प्राप्त की।

उक्त नगर के अनेक कवियों का इनका सत्संग हुआ और तभी से इनको काव्य पर प्रेम हुआ ' कुशाग्र बुद्धि और विद्या-व्यसनी तो आप थे ही थोड़े ही समय में इस विषय के अनेकानेक ग्रन्थ मनन करके काव्य रचना आरम्भ कर दी। सबसे प्रथम 'रस रत्नाकर' नामक नायका भेद का ग्रन्थ निर्मित किया। इस ग्रन्थका ठीक २ सन सम्वत् विदित नहीं हां यह अवश्य विदित है कि यह ग्रन्थ सन १८५७ ई० के ६ या ७ वर्ष पूर्व बन चुका था। इससे जान पड़ता है कि १४ या १५ वर्ष ही की अवस्था में इन्हों ने काव्य-रचना आरम्भ कर दी थी। सन १८५७ के भयंकर सिपाही विद्रोह (Mutiny) को कौन नहीं जानता, क्या दोषी क्या निर्दोषी सभी को इस के विषमय फल भोगने पड़े। जयराम चकलेदार के जिस घर के लेखराज जी उत्तराधिकारी हुये थे वह गोलदरवाजे के निकट पकरिया टोले में 'जयराम का हाता' इस नाम से विख्यात था। सरकार अंगरेज ने लखनऊ में अधिकार प्राप्त करके उस ओर के सब मकानों के खोद डालने की आज्ञा दी, लूट पाट भी आरम्भ हो गई तब सकुटुम्ब लेखराज जी अपनी जिमीदारी गन्धौली जिला सीतापुर चले आये और फिर वहीं रहने लगे। विक्टूरिया पार्क का अधिकांश भाग इन्हीं के मकानकी भूमि में स्थित है। श्रीमती विक्टूरिया की मूर्ति खास इन्हीं के घर की भूमि में है। लखनऊ से गन्धौली आते समय न जाने कितनी वस्तुयें वहीं रहगईं। ऐसी ही वस्तुओं में 'रस रत्नाकर' भी था। जो कुछ स्फुट छन्द लोगों को स्मरणथे वे तो वर्तमान रहे परन्तु शेष ग्रन्थ का लोप हो गया सम्वत् का भी ठीक पता नहीं चलता विस्तार भय से उक्त ग्रन्थ के प्राप्य छन्दों में से दो यहां पर उद्धृत करते हैं—

बाग पराग सी शीस इतै उतै है खुटिला प्रभा खोवत भानु की।
बंशी धरे अधरा पै इतै उतै अमृत सी धुनि पूरित गान की॥
यों लेखराज सु सांवरे गोरी की जोरी निरंतर अन्तर ध्यान की।
होय सुकुंज थली मैं भली अली नंदलला औ लली वृषभानु की १

करि अंजन मंजन गंजन को मृग कंजन खंजन औ भखियाँ।
पल कोटकी ओट बचाय कै चोट अगोट सबै सुख मैं रखियाँ॥
लेखराज कहै अभिलाष लषाय कै लाखन पूरे किये सखियाँ।
तेई हाय विहाय हमै जरिजाय ये जी को जवाल भई अखियाँ २

इनका निर्मित दूसरा ग्रन्थ 'श्रीराधिका जीका नखशिख' है यह ग्रन्थ संवत १६१६ में बना था:—

दोहा—संवत नंदरु चंद पुनि, नन्द चन्द आनन्द।
कार्तिक पूर्ण सुपूर्ण किय, नष सिष लिखि सुखकन्द॥
लेखराज।

उक्त ग्रन्थ के दो छन्द नीचे लिखे जाते हैं।

कीधौं काम पास फंसि रह्यो है सुकामी मन कीधौं सर निकट सुबैठ्यो हंस मुद जुत। कीधौं चंद कंचन बनाय कै हिंडोरा शुभ आपुहीं झुलावत सुआनंन्द सो निज सुत॥ कहै लेखराज कीधौं आय कै उरभि रह्यो एक बुन्द चन्द मैं ते अमृत को है कै च्युत। नायका की नथ लटकन कुचबीच हालै है शिव को देखि मानौं भ्रमै शिवा इत उत॥ १॥

दीपक जोति कै दामिनी गोत कै रूप उदोत कै सोत सुनेह है। चंपक हार कै मालती भार कै कुंदन तार सिंगार सुगेह है। केसरि रास कै केतकी बास कै कंज प्रकाश हुलास

सों मेह है । है लेखराज की रिद्धि प्रसिद्धि कि सिद्धि की बुद्धि की दीपति देह है ॥ २ ॥

आपका तृतीय ग्रन्थ 'लघुभूषण' है । इस ग्रन्थ में बरवा छन्दोंही का समावेश है । एक एक बरवा छन्द के अन्तर्गत एक एक अलंकार लक्षण वा उदाहरण सहित वर्णित है । यह ग्रन्थ विद्यार्थियों ही के हितार्थ बनाया गया था यथाः—

बरवा--कीन्हों लघुभूषण यह बालहितार्थ।
कवि छमि ढिठई करिहैं मोहिं कृतार्थ ॥ लेखराज।

यह ग्रन्थ सम्वत् १९२८ में बना था जैसा कि उसी ग्रन्थ में लिखा है यथाः—

दोहा--सम्वत् वसुकर नंदरु शसि सुख कन्द ।
मासास्विनि सित दशमी वारहु चन्द ॥

यदि ईश्वर की कृपा रही तो शीघ्र ही यह ग्रन्थ भी प्रकाशित होगा । १८ वीं शताब्दि के अन्तिम ५० वर्षों में उत्तरी भारत में अंगरेजी शिक्षा का प्रचार आरम्भ होगया था । इन्होंने भी घर परही इसका अध्ययन आरम्भ करदिया और अच्छी योग्यता प्राप्त करली । उसी समय भगवती भागीरथी पर इनका प्रगाढ़ स्नेह होगया और उस समय से निम्नलिखित स्वनिर्मित छन्द को अपने जीवन का आदर्श मानते रहे यथाः—

हसन है गंगा अंग बसन है गंगा भूंखे असन है गंगा जलपान करौं गंगा को । बात करौं गंगा सांझ प्रात करौं गंगा दिनराति करौं गंगा मन मान करौं गंगा को ॥ कहै लेखराज

सब काज मैं करत गंगा गंगा जिय जानि हित दान करौं गंगा को। आन करौं गंगा जल कान करौं गंगा हर ध्यान भरौं गंगा गुनगान करौं गंगा को॥ १॥

निदान साधारण कूपोदक का त्याग करके फिर अवशिष्ट जीवन में गंगाजल परही निर्भर रहे। घर से गंगाजी के दूर होने के कारण सदा पात्रों में जल वर्तमान रहता था और इसी से तृषा निवारण की जाती थी। एकबार भयंकर ग्रीष्म ऋतु के समय एक आकस्मिक घटना वश पात्रों का गंगा-जल नष्ट होगया। जब यह बात विदित हुई तो तुरंत ही कहार गंगाजल लाने भेजे गये परन्तु उनके आने में कमसे कम ४ दिवस की आवश्यकता थी। ऐसी दशा में स्थानीय ब्राह्मणों की कांवरों से तिगुने चौगुने मूल्य पर गंगाजल एकत्रित किया गया, परन्तु कोई सन्तोष प्रद फल न निकला कारण एकलोटे भरसे अधिक जल प्राप्त न होसका इस लोटे भर जल पर ग्रीष्म ऋतु के ४ दिन काटने थे बस आप सब उस भयंकर कष्ट का इसी से अनुमान कर सक्ते हैं, परन्तु आप विचलित नहीं हुये और इतने जल पर निर्भर रहने का दृढ़ निश्चय कर लिया। तीन दिन तो बड़े दुःख से व्यतीत हुये परन्तु चौथे दिन असह्य कष्ट था उसी समय में कहारों ने जल उपस्थित किया इसी घटना का अवलम्बन लेकर आपने निम्नलिखित छन्द बनाया:—

गंग के नीर को नेम लियो बस जीविका के भयो बास परे हैं।
कैयौ दिना सुबिना जल के गये पै पनते नहीं नेक टरे हैं॥
हेरत राह लखौ लेखराज सुलाखन ही अभिलाष करे हैं।
तौ लगि धीमर भार भरे जल गंग को धाय कै लाय धरे हैं॥

गंगा जी पर आपका दृढ़ विश्वास था और अपने भविष्य को उन्होंने गंगा जी ही पर छोड़ रक्खा था, दो एक स्थान पर इसी गंगाभरण में उन्हों ने स्पष्ट कहा है 'तारो न तारौ चहै लेखराज हमैं यक आसरो गंग तिहारो' था—

काहू बाहु युद्धको है काहू मति शुद्ध को है काहू नर क्रुद्ध काहू बुद्ध कर करीको। काहू को है जोग और जागरन जप काहू काहू कोहै जज्ञ बरदान बर बरीको॥ काहू को गनेस कोहै काहू को दिनेस कोहै काहू पुन्य वेसको है काहू हर हरीको। इन को न दोसौ लेखराज कहै तोसों पर मोंहि तौ भरोसो पोसो एक सुरसरी को॥

ज्यों ज्यों वृद्धावस्था बढ़ती गई त्यों त्यों आप की गंगा-भक्ति भी परिपक्व होती गई, यहां तक कि 'गंगाभरण' पुस्तक के पश्चात उन्होंने फिर कोई ग्रन्थ नहीं लिखा। रुग्ण होजाने पर बहुत दिवस तक औषधि होती रही परन्तु कुछ विशेष फल न होते देख आपने काशी-वास करने की अभिलाषा प्रकट की। निदान आप वहां जाकर रहनेलगे काशी में जाकर आपने अन्न का भी परित्याग कर दिया अब केवल दुग्ध और गंगाजल ही पर निर्भर रहते थे। ११ दिवस शान्ति पूर्वक निवास करके महाशिवरात्रि के दिन मणिकर्णिका घाट पर आप का कैलास-वास होगया। एक आस्तिक हिन्दू के हेत इससे उत्तम मृत्यु प्राप्त होना असम्भव है। उक्त तीर्थ के विशुद्धानन्द सदृश पण्डित गण एक स्वर से कहते थे कि ऐसी मृत्यु पाना मनुष्य को सुलभ नहीं है। पाठकों के मनोरञ्जनार्थ 'सहित्य पारिजात' में जो वर्णन इनकी मृत्यु सम्बन्ध में दिया है उसे उद्धृत करते हैं:—

निधि श्रुति ग्रह शशि विश्वकुज, कृष्ण फाल्गुणमास।
पाय महा शिवरात्रि दिन, वास कियो कैलास ॥
रुद्र दिवस बसि रुद्रपुर, देव नदी के तीर।
विश्वनाथ पद ध्यान करि, त्यागन कियो शरीर।
आदि सुकवि उरकामना, हुती जौन लखि तौन ॥
निम्नलिखित वर छन्द के, सरिस लह्यौ सुरभौन।

लेखराज कृत कवित्त।

स्वान औ शृगाल बृक बदन विशाल कोटि करैं पुखलाल थाल कच्छ मच्छ घेरेरी। लहरि हिलोरे जनु झूलत हिंडोरे माहिं पौन झक झोरे बोरे देत चहुँ फेरेरी ॥ लेखराज यहै अभिलाष अभिलाषै ताते गंगा जू न आन अभिलाष मन मेरेरी। काक गृद्ध भीर चाम लेत चीर चीर कब देखिहौं शरीर निज नीर तीर तेरेरी।

ताको शशि इव विशद यश, बरन्यो कवि लछिराम।
जाकहं पढ़ि सब सुकविवर, लहिहैं उर विश्राम ॥

यथा लछिराम कवि कृत।

वृषभ सवारी कंठ भूपे रुद्र अक्ष अरु मुण्डमाल व्यालयुत शोभन भले गये। भाल मैं मयंक बंक अंक ते रहित तीनि नैन तापि तपि पाप पुञ्जहं दलेगये ॥ कहै लछिराम लेखराज मिश्र महाराज गौर अंग संग मैं विभूतिहि मले गये। शिव की पुनीते शिवव्रत व्रत कै कै शिव ह्वैकै कै शिवा का शिवलोकहि चले गये ॥ २ ॥

भागि सराहैं सबै लेखराज की पूरुब पुन्य के अंकुर जागे।
आइहैं आजु यही मग है सो विमान लिये नभ मैं अनुरागे ॥

बाहन चाहन है वृषको लछिराम कहै वर प्रेम मैं पागे।
देव सबै झिगरे इतही त्रिपुरारि उन्हैं उत लै गये आगे ॥२॥

"विशाल" कविने भी कहा हैः-

जौन दशा अभिलाषि हिये बिच मोद सों आदिक बीश कह्यो है।
काहु विशाल कहौं अमरत्व ते पायो नहीं गहि मौन रह्यो है॥
पै छिति मंडल पै लेखराज अनूपम गंगको ग्रन्थ कह्यो है।
ताके प्रताप ते शंभुपुरी बिच त्यागि कै देह प्रतच्छ लह्यो है॥३॥

लेखराजजी जैसे कवि थे वैसे ही चित्रकार भी थे। दुर्भाग्य वश इस समय उनका निर्मित कोई भी चित्र वर्तमान नहीं है। संगीत शास्त्र पर भी आपका पूर्ण अधिकार था। देखिये निम्नलिखित छंद में संगीत सम्बन्धी शब्दों को गंगासम्बन्धी शब्दों द्वारा कैसा संश्लेषण किया गया है।

परम सुदेस जाकी 'बरुआ' सु 'सोहनी' है 'देवसाखि' सुजन 'कल्यान' दानदुनी है। दोउ कूल 'ललित' 'सहाने' सुघराई लीन्हे 'पुरिआये' 'तालन' की 'सिरी' सबचुनी है॥ दीप दीप के जे भूप आली चहैं छाया जासु 'शारदा' दि देव परवीन जे वै मुनी हैं। 'मेघ' शब्दलुनी तीनौ 'ग्राम' 'गाते' सुनी जाकी लेखराज गुनी समगुनी सुर धुनी है॥

डाक्टर ग्रियर्सन भारतीय भाषाओं के अच्छे ज्ञाता हैं आपने (Modern literature of hindustán) नामक एक पुस्तक बनाई है इस ग्रन्थ में डाक्टर साहेब को लेखराज जी के बुन्देलखण्डी होने का भ्रम हुआ है। जब कि शिवासिंह सेंगरने अपने सरोज में इनका ठीक पता दे दिया है तब हम नहीं जानते कि डाक्टर साहेब का यह भ्रम किन कारणों से उत्थित

हुआ है। जो हो, हमारी डाक्टर साहेब से प्रार्थना है कि वे अपनी इस भूल को उक्त पुस्तक के अन्य संस्करण के होने पर सुधार लेवें। लेखराज जी गन्धौली जि० सीतापुर के निवासी थे बुन्देलखण्ड से उनका किसी प्रकार का सम्पर्क न था। कांथा निवासी शिवसिंह सेंगरजी ने अपने 'सरोज' में कवियों के काव्य तथा जीवनचरित्र सम्बन्ध में बहुत कुछ लिखा है निदान लेखराज जी के विषय में उन्हों ने जो कुछ लिखा है उसे हम यहां उद्धृत करते हैं:—

"लेखराज कवि नन्दकिशोर मिश्र गंधौली जि० सीतापुर विद्यमान है" "ये महाराज भट्टाचार्यों के नातेदार गन्धौली ग्राम के नम्बरदार काव्य में महानिपुण हैं रसरत्नाकर १ लघु भूषण अलङ्कार २, गंगाभूषण ३, ये तीन ग्रन्थ इन के बहुत सुन्दर हैं।" यह नवलकिशोर प्रेस में मुद्रित शिवसिंहसरोज के ४४६ पृष्ठ में लिखा है। हम नहीं जानते कि लेखराज जी के भट्टाचार्य्यों के नातेदार होने का सरोजकार के पास क्या प्रमाण था जो उसने ऐसा लिखने का साहस किया? जो हो हम यहां अपने पाठकों को सूचित कर देते हैं कि वे भट्टाचार्यों के नातेदार कदापि न थे शिवसिंहजी को किसीने असत्य समाचार दिया और उन्हों ने उसे सत्य मान वैसाही लिख दिया। पाठकों को यह भी जान लेना चाहिये कि उनका ग्रन्थ 'गंगाभूषण' नहीं वरन् 'गंगाभरण' था जोकि आज आप सब सज्जनों के सम्मुख उपस्थित है। उक्त 'सरोज' के २८२ पृष्ठ में शिवसिंहजी ने आप के ७ छन्द भी लिखे हैं जिनमें से दो छन्द 'रसरत्नाकर' के ४ छन्द 'लघुभूषण' के तथा १ छन्द 'गंगाभरण' का है। 'लघुभूषण' के दो छन्दों को छोड़ कर

शेष पाचों छन्द अशुद्ध छापे गये हैं। हम नहीं जानते कि इन अशुद्धियों का उत्तरदाता कौन है। छापने वाले बेचारे कम्पोजिटर या शिवसिंहजी या उनको पता देनेवाले सज्जनगण। जो हो हम शिवसिंहजी के विशेष कृतज्ञ होते यदि वे उन के कई अशुद्ध छन्दों को प्रकाशित करने की अपेक्षा केवल एक ही शुद्ध छन्द प्रकाशित करते। विचार की बात है कि अशुद्ध छन्द तो किसी ने छापा और उसका उत्तर दाता कवि समझा गया और इस प्रकार व्यर्थ ही में उसकी यथार्थ योग्यता का अपमान हुआ। कविता प्रेमियों के हितार्थ अब हम लेखराजजी की हस्त-लिखित प्रति से मीलान करके उन छन्दों को शुद्ध कर देते हैं।

'शिवसिंह सरोज' २८२ पृष्ठ, प्रथम छन्द का अन्तिम पद्:—

अशुद्धः—अबहरवरी सरवरी मिलैं कैसे कन्त आरहरी अरहरी अरहरी अरहरी।

शुद्धः—अबहरवरी सरवरी मिलैं कैसे कंस अरहरी अरहरी अरहरी अरहरी।

इस छन्द में अनुशयना नायका है।

द्वितीय छन्द का प्रथम पद—

अशुद्धः—रंति रति रंग पियसंग सों उमंग भरि उरज उतंग अंग अंग जंबूनद के।

शुद्धः—रचीरति रंग पिय संगसों उमंग भरि उरज उतंग अंग रंग जंबूनद के।

उसी छन्द के तृतीय चरण में 'लाखि लाखि' के स्थान में 'लाख लाख' होना चाहिये।

लघुभूषण अलंकार तृतीय बरवा छन्द—

अशुद्ध—सांचे कमल से नैना निशि दिन फूल।
विना नालके लाने श्रुतिहि दुकूल॥

शुद्धः—सांचे कमल सुनैना निशि दिन फूल।
विना नाल के लोने श्रुति हृद कूल॥

उक्त छन्द दृष्टान्त अलंकार के उदाहरण का है। देखिये 'सु' को 'से' वाचक में परिवर्तन करके सरोजकार ने छन्द को कैसा नष्ट भ्रष्ट कर डाला है।

चतुर्थ बरवा छन्द।

अशुद्ध—लेत गंग जल मुण्डन खगनस हेत।
राजत गोदी शंकर जन सुख देत॥

शुद्ध—लेत गंग जल सुण्डन खग तस हेत।
राजत गोदी गिरिजा जन सुख देत॥

गंगाभूषण के स्थान में गंगाभरण चाहिये। द्वितीय पद के प्रथम चरण में 'बंककर चलत' के स्थान में हस्तलिखित प्रति में 'वक्रकर चलत' है। पाठकगण इसी के अनुसार उक्त पुस्तक का पाठ सुधार लें। साहित्य-संसार से लेखराज जी का जो सम्बन्ध रहा, उसी विषय की स्थूल २ बातें ऊपर लिखी गई शेष बातें विस्तार भय से छोड़ दी जाती हैं वंश विषय में विशेष विवरण जानने के हेत आगे कवि-वंश-वर्णन पढ़िये अस्तु अब हम यहीं पर विराम करते हैं।

कृष्णविहारी मिश्र.

कवि वंश वर्णन ।

जगत द्विवेदी विदित हैं, विश्वामित्री जौन ।
तेहि कुल राजा राम भे, ठाकुर राय सुजौन ॥
तिनको विबुध समाज अरु, सब राजन करि मान ।
पदवी दीन्ही मिश्र की, जाहिर सकल जहान ॥
ता सुत मिट्ठन लालजू, तिनके राम अनन्त ।
चिन्तामणि हैं राम पुनि, कमल कृष्ण गुणवन्त ॥
जागेश्वर जाहिर जगत, तनय देवमणि तासु ।
फेरि जटा शंकर तदनु, देवदत्त सुत जासु ॥
देवदत्त के सुत भये, सुखनन्दन सुख धाम ।
सदानन्द पुनि सांवले, कृष्ण भये अभिराम ॥
ता सुत पद् जग विदित भे, परम प्रतापी जौन ।
विद्या गुण मन्दर विदित, सब सुखमा के भौन ॥
कुँजविहारी भ्रात लघु, सिद्धनाथ जग ख्यात ।
पुनि ठाकुर परसाद भो, तासु अनुज अवदात ॥
तासु भ्रात सुखलाल तेहि, अनुज सुबाल गोविन्द ।
सब भ्रातन में लघु जगत जाहिर ब्रह्मानन्द ॥
सब भ्रातन मैं ज्येष्ठ जो, कुंजविहारी शर्म ।
ता सुत मुरलीधर भये, मुरलीधर प्रिय पर्म ॥
तिन सुत नन्दकिशोर भे, भक्त सुनन्दकिशोर ।
नाम कियो साहित्य मैं, लेखराज यह ओर ॥
लेखराज महाराज के, तीनि पुत्र अभिराम ।
लालविहारी नाम उपकवि, द्विजराज ललाम ॥

मध्यम युगलकिशोर, ब्रजराज सुकवि उपमान ।
रसिकविहारी लाल लघु, सब विद्या गुणधाम ॥

(साहित्य पारिजाते)

पूज्य वर द्विजराज जी के दो छन्द यहां उद्धृत करते हैं–

मच्छ कोल कच्छप कुठारी नर सिंह रूप देखि वेद विरद बतावैं भ्रत्ति भलि के । जैसे गज ऊबर्‍यो उताली द्विजराज बची लाज द्रौपदी की ओट अम्बर अवलि के ॥ संयुत खरौना जी बरौना को हरौना जोई जानकी वरौना रमा रौना रंग अलि के । सांप को बिछौना किये यशुमति छौना वहै मेरो दुखदौना जौन बौना भयो बलि के ॥ १ ॥

धरि भाल पै बाल कला शशि की चै प्रभा चहुँ ओर न तावति है ।
महाराग मंज्यो मुख मंजुल ते दै अभैवर अमृत नावति है ॥
भुजा सायुधी अंग भरे सुखमायों हिये द्विजराजहिं भावति है ।
चढ़ी सिंह पै वैरिन को बधि कै ज्यों बजावति गावति आवति है ॥

दुर्गाष्टक, कालिकाष्टक आदि अनेक छोटी २ पुस्तकों की रचना के अतिरिक्त आप कोई बड़ा ग्रन्थ निर्मित नहीं करसके और इसी बीच में आपका स्वर्ग वास होगया आप के निर्मित स्फुट छन्द बहुत से हैं ।

अब हम पूज्यवर ब्रजराज जीके भी दो छन्द लिखते हैं–

सारी शिर बैंजनी मैं कंचन बुटी की ओप मुकुत किनारी चहुँ ओरन गसत हैं । जरवीली जरित जरीकी जाफ़रानी पाग कोर मैं जमुर्रदी जवाहिर लसत हैं ॥ रतन सिंहासन पै दीन्हे गलबाहीं मुख मन्द मुसकाय भवताप को नसत हैं ।

या विधि अनन्द भरे राधा ब्रजचन्द्र सदा दम्पति चरन मेरे हिय मैं वसत है ॥ १ ॥

गज ग्राहसों छोरि निवाह कियो मृग संकट को।चित लाइये तौ।
ब्रज इन्द्र मैं भारत पै भरुही ज्यों करी करुना त्यौं बचाइये तौ॥
अब संग दुकूल के जाति है लाज अहो ब्रजराज जू आइये तौ।
यहि मूढ़ दुसासन के करसों उरझो अंचरा सुर झाइये तौ २॥

आज कल आप साहित्य पारिजात ग्रन्थ की रचना कर रहे हैं। ऊपर कवि वंश वर्णन उसी ग्रन्थ से उद्धृत किया गया है स्फुट छन्द आप के बहुत है। समस्यापूर्ति विषय के काव्य सुधाधरादि पत्रों में आप के छन्द निरन्तर प्रकाशित होते रहे हैं।

कृ० वि०



श्रीगणेशाय नमः ।

गंगाभरण ।

मंगलाचरण ।

अंग अंग शोभा की तरंग है सुरंग रंग धीर है उतंग संग राजत महेश के । चक्कर चलत दलत दुख शक्र आदि चक्रसे भ्रमत भौंर ठौर एक देश के ॥ एकरद धारे हैं बिदारे हैं विघन वृंद जन सुख कंद फंद फारे महिषेश के । लेखराज केश छोरि वेश दीन ताते पेश वंदत हमेस पद गंगा औ गणेश के ॥ १ ॥

गंगाजल प्रशंसा ।

शैलन टारि बिदारि गुहा कल शब्द निसारि

कढ़ो झनकारि है । शीस पुरारि बिहारि हरी पद धूरिहि धारि सबै गुनगारि है ॥ याही बिचारि पुकारि कहै लेखराज सदा हिय धारि निहारि है। पापन पारि है दासन तारि है गंग को बारि है सो सुखकारि है ॥ २ ॥

पुनः ।

कूल प्रचारिकै मूल उचारिकै झारि कियो कलि के कुलरारि है । मारि निकारि दिये यमदूतन दुःख औ दोषन जारि यमारि है ॥ डारि कहै डरको लेख राज लखौ जग जालन फारि निहारि है । पापन पारि है दासन तारि है गंगको बारि है सो सुख कारि है ॥ ३ ॥

कवियों के प्रति प्रार्थना ।

भये अहैं होनहार कबिन प्रणाम करि बिनती सुनाय बात डारों यह कान मैं। होउँ नाहिं कबि कविताई रंचऊ ना जानो ताते करि कृपा भूल छमो जू अजान मैं ॥ सुजन सराहि हैं सुहेरि हितही को मेरे करि सनमान यह मांगत हों दान मैं । कहै लेखराज लखो लख कबि पन्थ याते अलंकार मिस कीन्हों गंगागुन गान मैं ॥ ४ ॥

पूर्णोपमा लक्षण ।

दो०--वाचक धर्म अवर्ण्य अरु, वर्ण्य चहूं जहँ होय।
उपमा दै करि पूरि ये, पूरण उपमा सोय॥५॥

उदाहरण ।

सुमिरन तेरो हेरो जगमें घनेरो सुख सुजनको दाता सदा शुद्ध सुधा सार है। ललित ललाम सुख धाम विसराम मन काम तेरे नाम सम काम तरु डार है ॥ वेद इमि गायो पायो पार पैन पापी पायो जौन जाके मन भायो विनहीं विचार है। लेखराज वेनु धर एनु चेनु लेनु देनु गंगा तेरी रेनु सुर धेनु सी उदार है ॥ ६ ॥

लुप्तोपमालक्षण दोहा ।

विषय धर्म विषई बहुरि, वाचक चारौ आनि ।
पुनि एक द्वै त्रैलोपिये, लुप्तोपमा बखानि ॥७॥

छन्द ।

पहिली वाचक, दूजी धर्म, वाचक धर्म तीसरी धर्म। चौथी वाचक विषय बखानौ, पंचई उपमा नहिं को आनौ ॥ छठई वाचक औ उपमान, सतई धर्म अव-र्ण्य बखान । वाचक धर्म और उपमान, आठो लुप्ता कहत सुजान ॥ ८ ॥

आठो लुप्ताओं का उदाहरण ।

'उज्जल धूर कपूर' 'कगार अगारसे' 'मुक्ति नटी' जहँ पैयत । 'ताहीके बीच बहै सुधाशुद्ध' लखे कलि दुःख 'छुधा से नसैयत' ॥'पान के सुःख समानु पमानन''बुद्धि भूमी सम' पैन बतैयत । मायहिके गुन गंग लखो'लेखराज जो लाखऽभिलाष सो गैयत' ।६।

पुनः ।

मंजु दल अंघ्रि सुरनूपुर सो हँस सुरसारी जोन्ह आभरन जोति द्विज चहिये । एक कर करे कंज दूसरे कलित कुम्भ जाके सम और लोक उपमा न गहिये ॥ तीसरे अभय चौथे वर वर दृग तीनि भाल विधुबाल है विशाल शिव लहिये । लेखराज अघ सम निसि खण्ड खण्ड करे शेषर किरीट मण्ड चण्ड चण्ड कहिये ॥ १० ॥

अनन्वय लक्षण दोहा ।

जहां वर्ण्य समवर्ण्य है, नहिं कोऊ उपमान ।
तहां अनन्वय कहत हैं, अलंकृती सज्ञान ॥११॥

उदाहरण ।

तीनि देव बड़ेते लुकाने पहिलेई याते एक ब्रह्मलोक छीर सिन्धु एक नग मैं । ताहू पै न जा-

न्यो भेव पूछे जात अहमेव वृथा करि सेव पूजे देव देव पग मैं ॥ कोऊ न लखान्यो लख्यो लाखन में लेखराज इत उत जाय धाय योहीं नापी मगमैं। पाप ताप पाता करि सुयश को ख्याता गंगे मुकुति की दाता माता तोसी तुही जग मैं ॥ १२ ॥

उपमेयोपमा लक्षण दोहा।

वर्ण्य समान अवर्ण्य अरु, है अवर्ण्य सम वर्ण्य।
सोई उपमेयोपमा, जाको नहीं अवर्ण्य ॥ १३ ॥

उदाहरण।

तीनौताप ताई को करत शीतलाई और विशद निकाई कहि शारदा न पाई है। धाई दीप दीपलौ सुधाई समुदाई छाई झांई स्वच्छ जासु सुखदाई विश्वभाई है ॥ ताकी सुघराई लेखराज कहताई कहै और समताई लोक मैं न स्वेतताई है। गाई जन्हु जाई सम शरद जुन्हाई अरु शरद जुन्हाई सम गाई जन्हु जाई है ॥१४॥

प्रथम प्रतीप लक्षण दोहा।

तहँ प्रतीप पहिलो कहत, सब गुन ज्ञान निधान।
जहां विषयथल आनिये, विषई राखि समान १५॥

उदाहरण।

भव भय भौंर मैं भ्रमत भूले भूरि जेहैं भटके

न भेंटत भभरि जाको तीर है । सुर मुनि नाग अनुराग सों विविध विधि धारन करत वन्दि महा मतिधीर है॥ लेखराज भाषत न राखतहै पापछुधा उर अभिलाषत हरत भ्रम भीर है। सेत शुभ शुद्ध सोहै स्वाद है सरस रस सुरसरी नीर ऐसो सुरभी को चीर है ॥१६॥

द्वितीय प्रतीप लक्षण दोहा ।

जहँ सन्मुख उपमान के, वर्ण्य अनादर पाव ।
सो प्रतीप भूषन जगत, भाषत सब कबिराव ॥१७॥

उदाहरण ।

कहा कलि कलुष निकन्दन को मद याते अधिक असुर कुल कालिका संघारे हैं । लेखराज पाप जारिबे को कहा गर्व रावरे ते बहु बिटपसमूह वन्हि जारे हैं ॥ कहा निज शोभा पै भभरि भोरे भूलौ आपु आपते विपुल प्रभा पुंज भानु धारे हैं। कहा निज तारन को गहत गरूर गंगे तुमते सुभारे मैं निहारे शसि तारे हैं ॥१८॥

तृतीय प्रतीप लक्षण ।

वर्णन कृत उपमेय ढिंग, अनादरित उपमान ।
इबिधि प्रतीप तृतीयको, लच्छण जानत जान॥१६॥

उदाहरण।

बूँदहि बूँद सुगारिकै झारिकै बारिकै जारिदियो नहिं पीर की। मूँदिकै भाजन काढ़ि मथो कथो अंग नहीं माति जासु अधीर की॥ पान कै लीन्हों कहै लेखराज सुजामें रहै न छटा छबि क्षीर की। कैसे गरूर कै कूर करैगो सो फेरि बराबरी गंग के नीर की॥२०॥

चतुर्थ प्रतीप लक्षण।

जहँ उपमेय समान को, विषई पावत नाहिं।
सो प्रतीप चौथो लखो, भूषन कविता माहिं॥२१॥

उदाहरण।

नैनन जाहि लखो नहिं बैनन ते सुनि कान कहानी सुधा की। और सुरासुर पान समै बड़ो दोष जु पंगति भेद दुधाकी॥ नेकु बुझै न तृषा मृग बारि ज्यों जो जियमैं जगै नीर छुधा की। क्यों लेखराज सु गंग के अम्बु की सौंरत हौ समताई सुधा की॥२२॥

पंचम प्रतीप लक्षण दोहा।

विषय देखि जहँ कीजिये, सब विधि विषई व्यर्थ।
पंचम भेद प्रतीप यों, भाषत सुकबि समर्थ॥२३॥

उदाहरण ।

हेरी नीरही की निरमलता की समताई पारद में शारद न शारद के घन मैं । तेरो जव यश जग मगि रहो जग बीच परम पुनीत पौन आवत न मन मैं ॥ तेरे तेज प्रवल प्रचण्ड की उदंडता को कोऊ ना देखात अवदात देवगन मैं । कहै लेखराज जन्हु जाई तेरे तारे तूल तारे हैं न भारे ना निहारे रेनु कन मैं ॥ २४ ॥

रूपक लक्षण ।

है अभेद उपमान तद्रूप वर्ण्य जेहि ठौर ।
अधिक न्यून सम भेदषट् रूपक लसत सठौर ।२५।

अधिक अभेद रूपक उदाहरण ।

कोलाहल जलकल कोकिला किलकि कूजे शीतल समीर महै बहै मन्द चाल है । भ्रमै भौंर भौंर ठौर ठौर दौरि दौरि देखो फूले फूल बुद्बुद अमित सुमाल है ॥ देश देश कीन्हो है प्रवेश वेस जाकी प्रभा आनँद हमेस चराचर सब हाल है। लेखराज योगिन वियोगिन संयोगिन को सुरसरी सुरभी सोहाई सब काल है ॥ २६ ॥

न्यून अभेद रूपक उदाहरण ।

शंख औ चक्र गदा कर कौल सुचारहु हार हिये

जपको है। संग रमा ढिंग कौस्तुभ के भृगुको पद चिन्ह भले चपको है॥ राजत है खगराज पै वेग स्वधाम को जात चलो लपको है। याहि लखौ लेखराज सुगंग को तारो या बिष्णु बिना तपको है २७॥

सम अभेद रूपक उदाहरण।

करम कुदारसों सुधार अघझार झार सत्य की सरावन चलाई चित चेती है। श्रद्धा हल नो ते धर्म होते वृष वोते जोते पोते की न शंक रीती ईती भीती जेती है॥ लेखराज पुन्य बीज डारि न सिहारि सकै बाढ़त अपार राशि जानिये न केती है। रिद्धि सिद्धि जेती लेती लेती लुनि साहज में गंगाजूकी रेती खेती मुक्ति फल देती है॥ २८॥

पुनः।

मकर उरग भारे सोहत दतार कारे कच्छ रथ स्वच्छ गति राजत उतंगिनी। भांति भांति पैदर सुकांति जलचर जेते चंचल चपल मीन तरल तुरंगिनी॥ लेखराज पाप कोट वोट कोट कोट चोट करत गरद रद कुपथ कुढंगिनी। कलि कुल गंजनी यमादि सुख भंजनी है सैन चतुरंगिनी सु देवकी तरंगिनी॥ २९॥

अधिक तद्रूप रूपक उदाहरण ।

गाजिकै घोर कह्यो गुफा फोरिकै पूरि रही धुनि है चहुंदेसरी। दोऊ कगार बगारकै आनन पाप मृगान को खात जु वेसरी ॥ तापै अघात कबौ न लखो गनि नेकु सकै नहि शारद शेसरी । सो लेख राजहै गंगको नीर जु केसरी अद्भुत वेसरी केसरी३०॥

न्यून तद्रूप रूपक उदाहरण ।

पंकमैवास औ निर्मल खास विराजत जास प्रकास अतूल को । सूरज आदि दे देवन को हित भौंरभ्रमै नित मेटत सूल को ॥ ताकी कोऊ समता लेखराज कहै सुमहै कियो कारज भूल को । भंग तरंग जु गंग को वारिजु वारिज वारिज है बिन मूल को ॥ ३१ ॥

सम तद्रूप रूपक उदाहरण ।

धूर कर दूर पूर पंक तल भूर घूर मूर झूर चूर तूर तरुन उखारो है । बुदबुद कञ्जभञ्ज गुंजरत भौंर पुंज दानप्रिय लुंजसो न होत नेक न्यारो है ॥ पौन गौन गौन रौन सुर कहि सकै कौन मौन भली जौन तैं सरूप सेत धारो है । लेखराज पाप सांकरन को मरोर तोर गंगजल गज सुरगज मतवारो है ३२॥

परिणाम लक्षण दोहा ।

विषई जहँ उपमेय, मिलि करत काज उपमेय ।
इमि परिणामाभरण को, लक्षण कवि कहिदेय ३३॥

उदाहरण ।

तेरे नाम सुखधामही के अनुराग आगे अग निगमागम गनत किट किट सी । तेरे रेनुकन के प्रभाव अनगन आगे सुरराज राजधानी जानी जिन चिट सी ॥ लेखराज तेरो ध्यान धारिकै त्रिकाल हाल भाल लिपि विधिना की कीन्ही है अमिट सी । सुरसरि सलिल सुधा पी प्रान अर्पित कै पदवी परम पद पेखै काक बिटसी ॥ ३४ ॥

उल्लेख लक्षण दोहा ।

एकहि को बहुभांति सों, बहुत कहै गुनमानि ।
रीति प्रथम उल्लेख की, इमि कवि कहत बखानि ३५॥

उदाहरण ।

तीनि देव कहैं लेव येव है हमारो नाता अघ ओघवारे जो बहत अघ घाता है । सुरसब सदाही सराहि कहैं शुद्ध गाता मुनिमन मगन कहत सदा ज्ञाता है ॥ पुरुष पुराने जो बखानैं ताहि जन्हुजाता शेष आदि कहत सुचित धरा धाताहै। सगर सुवन

सुखी कहत है सुखिदाता लेखराज कुसुत कहत गंगा माता है ॥ ३६ ॥

द्वितीय उल्लेख लक्षण ।

एकहि एक अनेक विधि, करत जहां उल्लेख ।
गुण करि दूजो भेद इमि, जानि लेहु उल्लेख॥३७॥

उदाहरण ।

सीतलता हिम हिमकर निरमलता में कलता. में पारद सुनारद उमाह है । तेज में है भानु बान बिघन विदारन में जारन कलुष जात को कृशानु दाह है ॥ पावन ता पौन सेत ताभें है पताल रौन सुरपुर भौन गौन जौन शुद्ध राह है । लेखराज भवसिन्धु तारिबे तरनि गंगा आक औ जवास पास खास वारिवाह है ॥ ३८ ॥

स्मृति भ्रान्ति सन्देह लक्षण ।

सुमृति भ्रान्ति सन्देह तहँ, जहँ एकहि लखि एक ।
सुमिरै भ्रमै करै हिये, संशय त्रिविध विवेक ॥ ३९॥

स्मृति मान उदाहरण ।

तेरे तरुताल औ तमाल साल औ रसाल सकल विशाल पंचतरु सर फुरकी । तेरो तोय मज्जन के त-ज्जन सराहिकहै लज्जन सुसज्जन समान सुरगुर की॥

तेरो नीर छीर ते अधिक हेरि हेरि फेरि कहै सुधाकुंड ते चल्यो है सुधा दूर की। कहै लेखराज गंगा तेरे नेरेही की सुधि आवे हिय मेरे हेरे छवि सुरपुरकी ४०।

भ्रान्तिमान उदाहरण।

गंगा जी के तीर तहां मरो एक पापी महां लेखराज देखी या अलेखी ताकी सिधि है। छूटत शरीर यमभीर भाजी धीर तजि पीर करि आई घिरि तीर नवौ निधि है॥ नाची नाची फिरति घृताची माची धूम धाम सकल सकाम सुर धाम लरै गिधि है। देव देवरानी भ्रमि भवजू भवानी कहै रमाचक्र पानी कहै बानी कहै विधि है॥ ४१॥

संदेह मान उदाहरण।

देव गति देनी लेनी मुकुति निसेनी स्वर्ग छल छिद्र छेनी असि पेनी अघ घालिका। कलिकी कतरनी है बरनी सुचारौ वेद हरनी कलुष ज्यों दनुज कुलकालिका॥ कहै लेखराज भव भय की अभयदा है सदा ही प्रनत जनकी है प्रति पालिका। विष्णु पद पालिका महेश मौलि मालिका मुकुति तरु थालिका किजै जैजन्हु बालिका॥ ४२॥

अपन्हुति लक्षण ।

झूठ कहै सांची दुरै, वाचक लाय न कार ।
शुद्ध, हेतु, परजस्त, भ्रम, छेका, कैतव, सार ॥४३॥

शुद्धापन्हुति लक्षण ।

मुख्य धर्म को गोप करि, झूठ जहां ठहराव ।
शुद्धापन्हुति को कहत इमि, लच्छण कविराव ॥४४॥

उदाहरण ।

कोऊ कगार निहारि समान अमान की सीम सरी सुख देनी । ताही के बीच विचारि विचारि कै बीचिन की विरची वर सेनी ॥ सो विधि सो कहिबे को कहा लेखराज की एती भई मति पेनी । पापी पधारिबे को सुख सों यह गंगन शुद्ध है स्वर्ग निसेनी ॥ ४५ ॥

हेतुअपन्हुति लक्षण ।

शुद्धातन्हुति में जबै, हेतु लाइये और ।
हेतु अपन्हुति कहत हैं, तहां सुकवि शिरमौर ॥४६ ॥

उदाहरण ।

पारद पूरन धूर कपूरन नारद दूरन शारद चीर है । चांदनी चारुन मालती हारु पहार तुषार न भावलवीर है ॥ है लेखराज लखौ चित्त कै हित्त

के नित जौन कहै मति धीर है। नीर न गंगसुधा है सुधा छिति पाप छुधा हित स्वच्छसो छीर है॥४७॥

पर्जस्तापन्हुति लक्षण।

वहै अपन्हुति में जबै, ल्याइय पद परिजाय। परजस्ता पन्हुति कहैं, तहां सुकवि समुदाय ४८॥

उदाहरण।

चांदनी रेत की सेत सरूप के एक नहीं गति बांचती है। धाय चलै कहुं मन्द चलै कहुं भार की भांवरी खांचती है॥ तीर के नीर के जीव के शब्द सों साजि पखावज राचती है। गंग को नीर नटी लेखराज न नाक नटी ठटी नाचती है॥४९॥

भ्रान्तापन्हुति लक्षण।

करै दूरि भ्रम और को, जहां सांच कहिबैन। भ्रान्तापन्हुति कहत तहँ, जे कविता के ऐन ५०॥

उदाहरण।

फूटै कली बुद बुद फूले फूल फेन फबै फिरै ठौर ठौरही भ्रमनि भौंर कल की। दीप दीप दीपति दिपति न छिपति छिति छायरही छवि छटा छोर छ्वै अमलकी॥ सुखी चराचर सोंधी लहरि समीर धीर परसत पीर हरै विषम के बल की।

लेखराज लखीतैं सुरभि सुखदाई आई नाहीं भाई कीन्हीं है बड़ाई गंगाजलकी ॥ ५१ ॥

छेकापन्हुति लक्षण ।

सांच दुरावै झूठ कहि, शंक मानि जिय यन्त्र ।
छेकापन्हुति अलंकृत, भाषत हैं कवितन्त्र ॥५२॥

उदाहरण ।

बाहनी हंस सो सेत सरूप अनूपता पेखिय रात है पारद । लोग पुराने कहैं जननी कर है परवीन सहान जो नारद ॥ नाम लिये नसैं पाप सो आप प्रताप की ताप कै भानु की भारद । गंग को गान कियो लेखराज तैं नाही मैं ध्यान धरौं सदा सारद ॥ ५३ ॥

कैतवापन्हुति लक्षण ।

कैतव करि कै और को, कहैं जहां कछु और ।
कैतवपन्हुति नाम तहँ, भाषत कवि शिरमौर ॥५४॥

उदाहरण ।

धर ध्वस्त कै धौरे धराधर को धधकी धरापै धुनि धारती है । ध्रुव धर्म को धीर दै धाम निधा-मनि धोखेहुँ धोखन पारती है ॥ धुर धर्षित विष्णु धका धकी कै अध ओघन धूरि लौं झारती है ।

लेखराज के पाप धुवै मिस सुर्धुनि धार धुकार पुकारती है ॥ ५५ ॥

उत्प्रेक्षा लक्षण।

वस्तु हेतु फल चाह सो, जहां करत कोउ तर्क।
तहँ उत्प्रेक्षा जानिये, कवि कमलन के अर्क ॥५६॥
उक्तानुक्त सुवस्तु मैं, द्वै उत्प्रेक्षा मानि।
सिद्धासिद्ध सुचारि विधि, हेतु फलहि मैं जानि ॥५७

वस्तूत्प्रेक्षा उक्त विषयाऽदाहरण।

सुरसरि मैया तेरे विमल सलिल बीच परत भ्रमर जो लगी है शोभा सरसन। ताकी उपमाके कहिबे को जे सुकवि वर शेष शारदादि हेरि हेरि हारे बरसन। ताहि मतिमंद लेखराज धौं कहै गो कहा तदपि सु यथामति कहत है डरसन ' मानौं छीर सर सन सैन कृत हरि सन छूटि चल्यो कर सन वहि है सुदरसन ॥ ५८ ॥

वस्तूत्प्रेक्षा अनुक्त विषयाऽदाहरण।

बाहन मकर राजै साजै सेत सारी पग नूपुर सो सुरको समूह सचुरो परै। एक कर कुंभ एक कर मैं कलित कंज एक मैं अभय एक बर उचरो परै॥ धन्य लेखराज यह सुर धुनि ध्यान धरे शेषर

किरीट छवि पुंज रूचरो परै। भाल बाल इन्दु दूनो इन्दु ते मुखारविन्द हासविन्दु मानौ मकरन्द निचुरो परै ॥ ५९ ॥

हेतुसिद्ध उत्प्रेक्षा उदाहरण।

आई ब्रह्म लोक ते विशोक कीन्हे लोक लोक शोक की रहनि कहूं नाहीं पाई पाई है। सिद्धन को सिद्ध की समृद्धि की सुवृद्धि नित सुद्ध बुद्ध बुध जन मन भाई भाई है॥ यमराज लाजि रहे एकऊ न काज करे तरे सब लेखराज गुनगाई गाई है। अधम उधारिवे को सुर धुनि धार मानों धरा मे धधोरत फिरत धाई धाई है ॥ ६० ॥

हेतु असिद्ध उत्प्रेक्षोदाहरण।

सुरलोक को जात चली सब है जो विमानन पात की भीर लदी। कोऊ जाय निरै पद पावत ना धुनि पूरि रही यह चारो हदी॥ लिपि चित्रि और गुप्त की जेती लिखी सो लखा लखी में लखौ होत रदी। लेखराज वदावदी मानो करै यमराज ही की बदी बिष्णु पदी ॥ ६१ ॥

फलसिद्ध उत्प्रेक्षा उदाहरण॥

तेरी रज धारे हैं बिदारे हैं दरिद्र दुख जितहि निहारे हैं तितहि तिन कासी है। तेरो पयपान के

सुधा समान मानत है पदवी अमान निरवान लिन कासी है ॥ कहै लेखराज तेरी महिमा महान गंगा कहि न सिरात कीन्ही अमित नकासी है । तेरेतट वासी सुखरासी खासी पावैंगति अंत सभै देति मानो वास तिन कासी है ॥ ६२ ॥

फलअसिद्ध उत्प्रेक्षा उदाहरण ।

चित्र और गुपित चीति चीति चके चारि तन चितैदूत जम जम जम जम कोसे है । तापे लवकारि अहमेव टेव टेढ़ी मांडि छांडि छांडि सेव देखो देव देव दोसे है ॥ याते लेखराज आज टेरत है लाज मानि कान दैकै सुनो है सुचित गहि गोसे है । पातकी न मोसे सांची कहत हौं तोसे कलि कुल मानौ पोसे गंगा तेरेई भरोसे है ॥ ६३ ॥

सापन्हवाति शयोक्ति लक्षण ।

रूपकातिशय युक्ति जँह, सहित अपन्हुति होय ।
सापन्हव अतिशै उकुति, तहां कहत कविलोय ॥ ६४ ॥

उदाहरण

बादिबकै वृथा सागर मैं कोऊ भूतल शोधि कहै अगरी है । इन्दु मैं केते मुनिंद बदैं सुरधाम मैं काहू कि बुद्धि अरी है । और तिलोक विलोकि सबै लेखराज को या विधि जानि परी है । हैन

सुधा वसुधा में कहूँ लखि लीजिये गंगके वीच भरी है ॥ ६५ ॥

रूपकातिशयोक्ति लक्षण ।

बिषय त्यागि विषई उकुति, रूपक अतिशै माहि ।
रूप कातिशय उक्ति तहँ, यामैं संशय नाहि ॥६६॥

उदाहरण ॥

यम अरु नियम सुप्राणायाम निधिध्यास ध्यान धारना समाधि साधि साधि बरसन । मुनि गन अगन मगन वन वन देखो करत न डरत जुसीत घाम भरसन ॥ नाहीं छाहीं तदपि निहारे नेकु पावैं तासु छिनक न छूटत है केहू हरि करसन । सोई मैं लखावों लखौ लेखराज आज दुति छीर मैं सुधरसन अमित सुदरसन ॥ ६७ ॥

भेदकातिशयोक्ति लक्षण ।

भेदक भावहिं आनिये, अति शयोक्ति के मांहि ।
भेदका तिशय उक्ति इमि, सुन्यो कवीशन पांहि ।६८।

उदाहरण ।

जा दिनते सुर धुनि धरा में पधारी सुनि तब ते मगन मुनि गन ठौर ठौरई । दहिगये दोख दुख दूरि गये दुरित जे दूरि भई देखौ यमदूतन की दौरई ॥ कहै लेखराज राजधरम समाज भई

लाज भई गाज यमराज मुख झौरई। पाई रमा जौ रई चहूंघा वेद रौरई सु अंग सौरई भई पतित गति औरई ॥ ६९ ॥

सम्बन्धातिशयोक्ति लक्षण।

जहं अजोग मैं जोग अरु,जोगहि मांहिं अजोग।
सम्बंधातिशयोक्ति इमि, द्विविधि कहत कविलोग७०

अजोग में जोग का उदाहरण।

गंगा को चरित्र चितै परम विचित्र नितै जे ये अब कितै इतै पातकीन गोये जाय। कहै लेखराज देवराज वृषराज है कै केते खगराज छीर सागरमें सोये जाय ॥ चित्र कैसे लिखे चित्रगुप्त चुपचाप रहै चितै चितै चकित से कागदनि धोये जाय। दूत गये टरकि सरकि सब साथी यम मूंदि करि नरक अरक तीर रोय जाय ॥ ७१ ॥

जोग में अजोग का उदाहरण।

रोग औ सोग को नाम नहीं जहँ पूरि रहे सब उत्तम भोग है। लालितमा अरु पालित विष्णु की सेवत जाहि सदा सुरलोग है ॥ ऐसी जऊ लेखराज पुरी हरि ध्यान मैं योगिनहूँ को अजोग है। नेव तरंगिनि तारे तिहारे न दीवे को तदपिके हूँ न ोग है ॥ ७२ ॥

अक्रमातिशयोक्ति लक्षण ।

कारण कारज संग जहं, अतिशयोक्ति दरसाय ।
अक्रमातिशयउक्ति तहं, कहत सुकवि समुदाय ७३

उदाहरण ।

लेखराज गंगा तेरो अलख लखो है लेखा लखे न लखात लाख लाख लखौ है सचेत । न्हैबे को कढ़त गृह हद ते सुपद संग पद गाहि पद सद विष्णु के सपद देत ।। करके करत सह करसी अकर कर नरवर कर चारकर कर कर हेत । मूड़ के धरत साथ मूड़ पै चढ़ति है न मूड़ मौरे मोड़ै मूड़ ऐसो मूड़ मूड़ि लेत ॥ ७४ ॥

चपलातिशयोक्ति लक्षण ।

कारणते कारज चपल, अतिशयोक्ति मैं भास ।
चंचल अतिशैउक्ति तहं, वरणत मति परकास ।७५॥

उदाहरण ।

नेहै लगाय जो रैहै सदा तजि तेहै सुतेहै कलेस ना छेहै । जेहै सबै जरि पाप सु जेहै औ खेहै समान ततच्छ उड़ेहै ॥ पैहै सबै सुख को लेखराज जु धैहै रु गंग को नाम जो लेहै । मैहै सी बसंत दसंत मुक्ति को पसंत जाने कहा फल देहै ॥ ७६ ॥

अत्यन्तातिशयोक्ति लक्षण ।

हेतु काज सुविलोम जहँ, अतिशयोक्ति अति उद्ध ।
अत्यन्तातिशयोक्ति तहँ, भाषत सबमतिशुद्ध ॥७७॥

उदाहरण ।

कोऊ एक नरसो धरम देह धरसो न कीन्हो गयो मरसो चले लै ताहि घरसो । जाय तीर दरसो करार ऊँचे वरसो लगाय चिता तरसो अगिनि लाय झरसो ॥ पलक मैं ताको जौन ताको लेखा लेखराज वरनत बनत न कौतुक जो सरसो । पहिले वा धीर भीर देव संग दिवि गाछे पाछे ते शरीर बीर नीर गंग परसो ॥ ७८ ॥

तुल्ययोग्यता लक्षण ।

विषयन को विषईन को, धर्म होत जहँ एक ।
तुल्य योग्यता त्रिविधि इमि,भाषतसुकविअनेक ७९॥

वर्ण्यावर्ण्य उदाहरण ।

माता सो न त्राता औ न दाता हरिचन्द ऐसो धाता सो न राता है प्रपंच पंच कारिनी । इन्द्र सो न देव औ न दारा द्रोपदी सी और दुर्गा सी न दूजी है दनुज दल दारिनी ॥ छीर सो न स्वच्छ छपाहर छपाकर सो न छिति सो न छाजत है और छमा

धारिनी। कहै लेखराज हौ तिलोक में बिलोको बड़ो मोसो न पतित गंगा तोसी नाहिं तारिनी ८०॥

हिताहित लक्षण।

हित अरु अहित दुहून को, जहँ समान व्यवहार।
तुल्य योग्यता और तहँ, भाषत सुमति उदार ॥८१॥

उदाहरण।

साधक न सिद्धि निद्धि और जे विघन वृन्द दोउन अनन्द मन झारि झारि देति है। भक्तन को भक्ति शक्ति और यमदूतन को दोउन को नूतन सु गारि गारि देति है॥ सुकृत समाज को सु और यमराज हूँ को दोउन को देखौ गाजि तारि तारि देति है। कहै लेखराज गंगे दोउन को एकै संगै सुजन के पाप को सुवारि बारि देति है ॥ ८२ ॥

पुनः।

जबते भगीरथ ने आनी महिमण्डल मैं तब ते सुनीति रीति अद्भुत धारेतैं। तेरे तट आवै जोई कोई ताहि सममान काहू के सु जोख गुण दोष न निहारेतैं॥ कहे लेखराज ताहि कैसे कहौ गंगा मैया सापने में आवै ना विचार मै विचारेतैं पुन्य पुजवारे जे समान देवतारे और पतित कतारे करि एकतार तारेतैं ॥ ८३ ॥

अन्य तुल्य योग्यता लक्षण ।

भारे गुण समकरि जहां, वरणै बात प्रसंग।
तुल्य योग्यता तृतिय इमि, भाषत बुद्धि उतंग॥८४॥

उदाहरण ।

निगम निदानन ते सकल पुरानन ते कविगुनी आनन ते कामगाय गानी है। दिल दिलगीरन ते दारदी फकीरन ते माननीय मन महा चिंतामनि मानी है ॥ कहै लेखराज सुरराज के सोतरुराज राजत है आज जाहि वरनत वानी है । तीनो लोक जानी तीनो देवठकुरानी मातुगंगा तेरोपानी या मनोरथ को दानी है ॥ ८५ ॥

दीपक लक्षण ।

विषई विषय दुहूँन को, धर्म एक जहँ लेखि ।
तहँ दीपक बरननकरत, कविवर बुद्धि विशेखि ॥८६॥

उदाहरण ।

पातक रोगको होत संजोगन सोग सबै करि डारत दूरि है । काल अकाल की काल कराल विशाल जो है भवजाल सो तूरि है ॥ है लेखराज सुबुद्धि की वृद्धि औ निद्धि औ सिद्धिकी रिद्धि सुभूरि है। पुण्य को पूरि है आनंद रूरि है गंगकी धूरि है जीवन मूरि है ॥ ८७ ॥

आवृत्ति लक्षण दोहा ।

दीपक आवृत तीनि विधि, प्रथम पदावृति होय।
अर्थावृति पुनि उभयवृति,कहत सुकवि सबकोय ८८॥

पदावृत्ति उदाहरण ।

हरद्वार प्रागराज सिन्धु संग गंगाजी के तीनि थलबड़ेबड़े कहैं बुधिरासी है ।कहै लेखराज मेरे जान वै अजान महा जिनहिं न ज्ञान ऐसी मति गति नासी है ॥ शिव ते लगाय सिंधुताई देखौ दोऊ कूल सुखमूल गंगाजी मुकुति देति खासीहै। ठौर ठौर हरद्वार ठौर ठौर प्रागराज ठौर ठौर सिन्धु संग ठौर ठौर कासी है ॥ ८९ ॥

अर्थावृत्ति उदाहरण ।

कोऊ एक जन जिन जनम न जान्यो धर्म जातहुतो जन्हु जाके जौरे जौरे निजकाज ॥ ताहि डस्यो व्याल ततकाल ताको भयो काल विषविकराल पै चली न एकऊ इलाज ॥ परसत रेत प्रेत देत जो दोहाई भागे लेखराज गाजि भयो हरिहर सिरताज। थकि रहे दूततकि बकि रहे मुंह बाय चकि रहे चित्रगुप्त जकि रहे जमराज ॥ ९० ॥

पदार्थावृत्ति उदाहरण ।

पच्छी पटुकीरनी को फूल कासमीरनी को सीर

सोउ सीरनी को रूप जो अनंगा को । मंत्री मति धीरनी को मित्र दिलगीरनी को रतननहीर चीर पाट पीत रंगा को ॥ कहै लेखराज लखौ लच्छन सुवीरनी को प्रगट फकीरनी को बिना रसरंगा को । सज्जन को तीर नीको पच्छिम समीरनी को सुरभी को छीर नीको नीर नीको गंगा को ॥ ९१ ॥

प्रतिवस्तूपमा लक्षण ।

एक अर्थ की द्वै क्रिया, समवाक्यन मैं जत्र
भूषण प्रति वस्तूपमा, कहत सकल कवितत्र ॥९२॥

उदाहरण ।

आनंद के दान है सु प्रान है चराचर के करत बखान जे पुरान है सकल ते । पाप के तरुन के अलात से भ्रमत भौंर सुमन सोहात है पराग पूरो थल तै ॥ दीप दीप दीपति दिपति लेखराज कहै सीतल समीर बहै करिके न कल ते । कलते सकल जो वसंत दल भ्राजत है राजत है जमल बिमल गंगा जल ते ॥ ९३ ॥

दृष्टान्त लक्षण ।

जहां बिम्ब प्रति बिम्ब मधि, उपमेयो उपमान ।
वाचक बिन दृष्टान्त सो, वरनत सुमतिनिधान ॥९४॥

उदाहरण ।

आखर अनूप ते अरथ गुरुगाति कहै रसना के पद वर वाक वानी ठहरी । सुमन सुवास शुभ चंद में प्रकास भले भूमि औ अकास मै सुतासु छवि छहरी ॥ माया मध्य ब्रह्म तिहुँलोक में विलोकियत वरनो न जात है सुजाति मति हहरी । लेखराज धारी उर प्रान सुखकारी गंगे नैननि निहारी ये तिहारी प्यारी लहरी ॥ ९५ ॥

निदर्शना लक्षण ।

वाक्य अर्थ द्वै एक करि, वरनत हैं जेहिठौर ।
तहँ पर होत निदर्शना, सुनौ सुजन करि गौर ९६॥

उदाहरण ।

जो यश पावन पायो रमापति पावन्न धाय सिंदूर उधारे। जो यश चंद लहो हरिचन्द सुमन्द ह्वै डोम के जाय विहारे ॥ जोई दधीच लहो यशमीच लै इन्द्र जबै सबै दानव मारे । सोई गथी यश भागीरथी सहजै लहिहौ लेखराज के तारे ॥ ९७॥

सदसदर्थ निदर्शना लक्षण ।

निदर्शना मै सत असत, जहां अर्थ दरसाय ।
यह निदर्शना औरऊ, कहत सकल कविराय ॥ ९८॥

सदर्थ उदाहरण ।

भाधर उज्जलता सुभनादर सादर है जिमि वादर फेटिवो । पावनता परिपूरन पेखि कै पौन की ज्यों परजंक पै लेटिवो ॥ निर्मलताझलकी फलकी कलकी जलकी लहरीन को भेंटिवो । गंगके तीरन को लेखराज सुतै सेई है यमराज सों भेटिवो ॥९९॥

असदर्थ उदाहरण ।

गहि लिन पूछ हित रूछ नित छूछ मति तरिवे को चाहै जौन सागर अमित है। ताकी किय मूढ़ विलसन की सुचारु रुढ़ गूढ़ धरो जौन गृह चोरन के वित है ॥ करि कै अमोघ पाप भूले आप आपही में फूले फूले फिरत सुडोले जित तित है । योंही लेखराज नित काज जानि लीजे आज जो न गंगा बसत सुचित हित नित है ॥१००॥

व्यतिरेक लक्षण ।

जँह अवर्ण्यते वर्ण्य में, अधिकाई कछुपाय ।
वर्णन वर्ण्यहिको करिय, सो व्यतिरेक गनाय ॥१०१॥

उदाहरण ।

खंजर खंडरु खाड़े खरे खुरपा खुरपीन की धार निहारे । एक के दोय औ दोय के चारि करै याहि रीति सो लोक पुकारे ॥ या लेखराज लखौ अति

अद्भुत आवै न कोटि बिचार विचारे । गंग कीधार सो एकही बार मैं एकही सीसके पांच सुधारे ॥१०२॥

सहोक्ति लक्षण ।

द्वै भावन यक साथ करि, जहां वर्णिये ल्याय ।
तहँ सहोक्ति भूषण कहत, सुकविन के समुदाय१०३॥

उदाहरण ।

संकट विकट वर प्रवल विघन वृन्द बारू मैं बिलाय गये बड़े बड़े तगरे । परम प्रताप परि-पूरन तृताप तेऊ तुरतहि त्यागि गे प्रपंच पंच झगरे ॥ चित्र औ गुपित चितवत चके चोर ऐसे रहे खिसियाय जम जमदूत सगरे। लेखराज आवत ही तेरेतीर मातु गंगे दारिद दुरित दोऊ देखतही डगरे ॥ १०४ ॥

विनोक्ति लक्षण ।

कछु बिन हीनोहोय कै, कछु बिन सोभा पाव ।
भूषन द्विविधि विनोक्तियों,कहत सुकविकरिचाव१०५

प्रथम उदाहरण ।

राज औ पाट के साज सबै रहो हाटक सों परि पूर भंडारो । नारि पतिव्रत पूत सुलच्छन सोदर सेवक प्रानते प्यारो ॥ बैरीन हेरी कहूँ जिनको

यहकर्म विपाक सबैसुखसारो। एलेखराज सबै बिन काज जो गंगकी रेनुक नातैं न धारो ॥ १०६ ॥

द्वितीय उदाहरण।

केहू भांति ऐहै अपनैहै तौ बिसैहै नाहिं एकौ यह डर रहै सोरिपु अनंगा को। विधिहूँ विविध विधि बुद्धि उपजावै फेरि एकौ फरफंद न चलत फोर फंगा को। सुर सुरलोक में ससंकित रहत महा कहा करिसकै इहां काम नाहीं दंगाको। लेखराज चंदते उजेरो छीर चेरो ऐसो बिन छल केरो तेरो हेरो लित गंगा को॥ १०७॥

समासोक्ति लक्षण।

वर्ण्य मांझ जंह देखिये, प्रकट अवर्ण्य सरूप।
समासोक्ति भूषन कहैं, जे कविता के भूप ॥१०८॥

उदाहरण।

गिरि पै चढ़ि कै कढ़ि कै बढ़ि कै मढ़ि कै छिति पैरही जोति अमन्द। वरकूल दुवौ समतूल लसैं अरुमूल उभारत है सुख कन्द॥ घन सारद पारद सी दरसै सदा सारद नारद हेत अनन्द। लेखराज के पाप त्रई तन दूरि कै भूरि कै सीत ज्यों चांदनी चन्द॥ १०९॥

परिकर लक्षण ।

अभिप्राय युत दीजिये, जहां विशेषण आनि ।
अलंकार परिकर तहां,लीजै कविजन जानि ॥११०॥

उदाहरण

मंदाकिनी कहे मंदता की नास आसु होत विष्णु पदी कहे विष्णु पदवी करै उदोत । गंगा कहे गंगाधर गुनगन गाइयत जन्हु जा कहेते जग जग मगे जसजोत । सुर सरि कहे सुरसरि होत लेखराज भागीरथी कहे भागीरथी पाप पांतिरोत। शैल सुता कहे सैल सुतापति राजै सैल सगर सु-ता के कहे सगर सगर होत ॥ १११ ॥

परिकराङ्कुर लक्षण ।

अभिप्राय के सहित जँह, करिय विशेष्य बखान ।
परिकुर अंकुर अलंकृत, भाषत तँह सज्ञान ॥११२॥

उदाहरण ।

तीनौ देव गावैं तीनौं सुरसमताई पावैं तीनौ गुनवारे कोऊ घ्यावै सुरधामिनी । कहै लेखराज तीनौ रामते सरसनाम वंदत त्रिवेनी लहै कीरति ज्यौं दामिनी ॥ तीनौ काल मध्य देखौ तीनौसंधि सुमिरत तीनि दृग बारो करै तीनि दृगस्वामिनी। तीनो लोक जन चीन्हे तीनो हित मन दीन्हे तीनो तापहत कीन्हे तीनो पथगामिनी ॥ ११३ ॥

श्लेष लक्षण।

कै अवर्ण्य के वर्ण्य कै, कै दोहुन के अर्थ।
दोय होंय अश्लेषतँह, भूषन लसत समर्थ ॥११४॥

अवर्ण्यावर्ण्य उदाहरण।

गिरिते सुकढ़ि बढ़ि माढ़ि रह्यो यश अस पढ़ि पढ़ि वेद करै वढ़ि वढ़ि गान है। दोऊ कूल सम धराधरको सुखद सदा दीपति सुजाकी दीपदीप अहटानि है॥ कलिकुल तोम तम तूरि कीन्हें दूरि भूरि धारे दिव्य देह देवतान मैं प्रमान है। कहे लेखराज सुरसरि मैया तेरो नीर कीधौं सीत भानु कीधौं भानु की समान है॥ ११५॥

वर्ण्य अवर्ण्य उदाहरण।

परम पुनीत नील रीत वाले गात्रत हैं सुन्दर विशद कीन्हें घाट वार पार है। दोऊ कूल तूलन ये जौहरन भूरि भये निरखत दूरि पूर पानिप अपार है॥ बार बार झलकत झार झार झनकार सूर आदि धीर वीर बंदत सुधार है। कहै लेखराज मीत यश प्रतिपारिबे को पाप अरि मारिबे को गंगा तरवार है॥ ११६॥

अवर्ण्य वर्ण्य उदाहरण।

भोरहे अमित ठौर ठौर मेघा डोलत है कीन्हीं

जग जीवन सुवार झार झारिता । मोर मन हरषत बरषत सुधा बुंद नये नये पात कीन्हें तरु बेली हरिता ॥ भानु छबिदानी है सुआपने प्रतापही सों कहां लौं बखानिये सबै विचित्र चरिता । कहै लेखराज यों विराज रही आज सोई बरषा सरिस सुभ सोही सुर सरिता ॥ ११७ ॥

अप्रस्तुत प्रशंसा लक्षण ।

प्रस्तुत जहां प्रशंसिये, अप्रस्तुत को भाषि ।
अप्रस्तुत परशंस तँह, अलंकार हिय राखि ॥११८॥

उदाहरण ।

लघु गुरु धोखे नाहिं धोखे जोखे सुर पुर अमित अनोखे पोखे लोक मनि मानि है । नर अरु नारी की कहारी उपमारी कहौं भये हैं अनारी कवि केते भनि भनि है ॥ शेष और शारदा उदार मति हार मानि पावत न पार रहे केतो गनि गनि है । लेखराज भागीरथी तेरे नीर तीर हेरू तरु के बसेरू तौ पखेरू धनि धनि है ॥ ११९ ॥

प्रस्तुतांकुर लक्षण ।

प्रस्तुत को द्योतन जहां, अप्रस्तुत के मांह ।
प्रस्तुत अंकुर अलंकृत, ताहि कहत कबिनांह १२०॥

उदाहरण ।

कोऊ एक मूषक मरयो है मग मांझ ताके परे कृमि क्रम क्रम भीर सो बढ़ै लगी । ताहि लै उड़ानो काग छूटि गिरो हसे भाग सीतलाई जल देह औरई गढ़ै लगी ॥ लखै लेखराज ठाढ़े देवता विमानन पै चारो ओर जोर धुनि जै जै की मढ़ै लगी । कौतुक अपार भो निहारि गंग वारि धार बीच ते सुधार चार भुज की कढ़ै लगी ॥ १२१ ॥

पर्यायोक्ति लक्षण ।

प्रजा योक्ति द्वै विधि प्रथम, कछु रचना सों बात ।
दूजी छलकरि साधिये, कारज चितहि सोहात १२२॥

प्रथम उदाहरण ।

ढरकी कमंडल ते गरकी न सरकी है हरकी बिलोकिबे विशाल जटा कलमैं । दीन्हों है निचोर लीन्हों जोर कीन्हों जन्हुपान जांघ चीरि काढ़ी बाढ़ी चलीहै सुथल मैं ॥ भगीरथ पथ २ अकथ है गुन गथ मथत सुनदी नाथ धसी जाय तल मैं । लेखराज ताही को पुकारे ध्यान धारे जिन सगर के बारे जारे तारे एक पल मैं ॥ १२३ ॥

द्वितीय उदाहरण ।

सुर पुर चाहन उमाह सुत सम्पति न नेकु प-रवाह षटरस परसाइ दे। देह दैव भव तीनों ताप को नसाइबो न मांगत है सीत घाम जल बरसाइ दे ॥ लोभी मकरन्द मन मेरो भौंर जाय तेरे कौल पद पै तो ताहि जनि अरसाइ दे । चाहतहै गंगा मैया लेखराज येतो निज चरनै अमंद मुख चन्द दरसाइ दे ॥ १२४ ॥

व्याजस्तुति लक्षण ।

निन्दा मै स्तुति स्तुतिहु मै, निन्दा परति जुपेखि
द्वै विधि व्याजस्तुति सुयों,कहत पूर्व मत देखि १२०

व्याजस्तुति उदाहरण ।

लेखराज आज बिन काज को अकाज भयो जानि नाहि परी ऐसो दिननको फेरो है । कहां ते हौं नीरतीर निकसो समीर हेत काहू ना बतायो की सुभाव, यहि केरो है ॥ कहां जाउं कासों कहौं कौन सुने कोऊ कहूं ऐसो तो देखात ना देवैया दाद केरो है । जनम जनम केजे जोरे जीव संग गंग हाय सब पातक चोराय लीन्हों मेरो है ।१२६।

पुनः ।

हौं चलि आयो हुतो हिय हौस कै भागीरथ तट मोद बढ़ायो। सो न भई लेखराज नई ठई छीनि निचोलन चाम बोढ़ायो ॥ भूत भेंटाय कै कारे डसाय कै जोरावरी जगहूं सो कढ़ायो। कारि खलाय कै डौरू बजाय कै बैल चढ़ाय कै सैल हढ़ायो१२७

व्याजनिन्दा उदाहरण ।

जो सचराचर को तिहु लोक में देख्यो विलोकि सदा सुख कन्दै। जो कलिकी कज को रजसी करै रेनुका जाकी सबै जग बन्दै ॥ ताहि प्रशंसिबे को लेखराज जो कैसे प्रशंसै महा मतिमन्दै। धन्य हैं वे जग में जन जे यश जन्हु सुता सुनि कै न अनन्दै ॥ १२८ ॥

१ आक्षेपलक्षण ।

प्रथम बचन कहि आपुही, बहुरि रोकिये जौन।
प्रथम भेद आछेप को, जानि लेहु इमि तौन।१२९।

उदाहरण ।

रेनुका के कन नाहीं भूलि मैं बखाने केहूं गने सो न जाहि अनगन सुखदानी है। कहे लेखराज कहा कहिये कही न जात कहिबेई जोग तौन

अकह कहानी है ॥ दरसन नाहीं पद धोखो सो देखात देखे सुरपुर सरिस सकल सुखखानी है । गंगा तेरा पानी नाहीं भुले मैं बखानी ब्रह्म जोति सरसानी सानी मुकुति निसानी है ॥ १३० ॥

२ द्वितीयआक्षेप लक्षण ।

पहिले कहिरु निषेधको,कछु आभास सो आनि ।
इ विधि निषेधाभासको, लक्षण लीजे जानि॥१३१

उदाहरण ।

कहत हौं टेरे कोऊ जाहु जनि नेरे यहि सुर सरि केरे घेरे फेरे माहि परि है । लैहै छीनि पाप जोरे जनमके आप सैहै काहूकी न दाप चाप यमदूतै लरि है ॥ कहै लेखराज देवराज आदि वृषराज जैहैं भाज लाज काज काहू सों न सरि है । होयगी न अच्छी बड़े दच्छी हू न रच्छी सकै कच्छीकरि पच्छी अंतरच्छी गच्छी करि है ॥ १३२ ॥

तृतीयआक्षेप लक्षण।

प्रगट बखानि छिपाय कै, जहां बरजिये बात ।
त्रतियभेद आक्षे यों, सकल जगत विख्यात१३३॥

उदाहरण ।

सिद्धि औ निद्धि की वृद्धि न चाहत स्वर्ग

समृद्धि सुधा नाहिं पीजै। मुक्त है पापन सो वर मुक्त जो औ पदवी निरवान न कीजै॥ मांगत है लेखराज यहै करजोरि कै गंग जो आनँद भीजै सींजै सदा रहै कीजै जो छोह तो या जग में फिरि जन्म न दीजै॥ १३४॥

विरोधाभास लक्षण।

भासित होय विरोध सो, है न विरोध समर्थ।
कहत विरोधाभास इमि, असमंजसकरि व्यर्थ१३५॥

उदाहरण।

हारो न हीय सों जीय संभारो तो नेकसे काज को काहु विचारो। चारो हमारो कछू नहीं है करि आप कृपा की निहारो बिसारो॥ सारो कियो मिटि जैहै पै देखो सबै करि हैं तुव नाम उतारो। तारो न तारो कहै लेखराज हमैं यक आसरो गंग तिहारो॥ १३६॥

पुनः।

सोहै वार पार औ अपार महिमा है जाकी चलत कुटिल जो है शुद्ध करि लेत है। मत्त है मतंग संग पूत है तरंग ढंग अधगत सुर पुर सौंपैं करि हेत है॥ दीरघ करार वार लावत न वारहू मैं भ्रमत

भ्रमर भ्रम हरै करि चेत है। कहै लेखराज कल पल न करत गंगे मल युत जलते अमल करि देत है१३७

प्रथमविभावना लक्षण।

पहिली कहत विभावना, ताहि सकल कवि लोग।
कारन बिन जहँ पाइये, काज सिद्ध को योग॥१३८॥

उदाहरण

जानो जिन है न जप जोग जज्ञ जागरन जनम न कीन्हो है जजन देव गुरु को। चुगुली चवाई चोरी चौगुनी चटक चित करत सुजात न डरात झूंठ फुर को॥ हरि यश कान कीनों कबहूं न दान आन कीन्हों सुरापान न निदान मन सुर को। तौन लेखराज जन्हु जाई जलपान करि बिनहीं विमान देखो जात सुर पुर को॥ १३९॥

द्वितीय विभावना लक्षण।

प्रगट अपूरण हेतु ते, हेतु मान जहँ पूर्ण।
दूजो भेद विभावना, जानि लेहु तहँ तूर्ण॥ १४०॥

उदाहरण।

इन्द्र के जु ब्रन्द अरविन्द दृग है सुछन्द जो यबो चहैं तौ केहूं जात है न जोये ते। कूरुम हूं कोल शेष करिकै अशेष बल ढोवत चहैं तौ केहूं

जात हैं न होये ते ॥ कहै लेखराज लौं न कहा कहौं गंगा मैया देखत ही कौतुक सो बिन श्रम खोये ते । बिंध्यते बिलंद जे दुच्चन्द पाप छल छन्द एक जल बिंदु ते अनंद कंद धोये ते ॥ १४१ ॥

तृतीय विभावना लक्षण ।

कारण रोके हू जहां, सिद्धि काज ह्वै जात ।
तीजी कहत विभावना, तहां सुकवि सज्ञात ॥१४२॥

उदाहरण ।

मरो एक कामी क्रोधी कलही कृतघ्नी क्रूर कोढ़ी कूम क्लेश ते न नेकहुँ हलो गयो । कौन कहे मौन भली जौन भई पौन परसि गंग जल ताके भौन गौन कै भलो गयो ॥ लेखराज देवराज साज सब लीन्हे ठाढ़े अप्सरा विमानहूँ ते नेकु न छलो गयो । दूत दबकाय चित्रगुप्त हिंचकाय जम-राजहिं जकाय शिवलोकहिं चलो गयो ॥ १४३ ॥

चतुर्थ विभावना लक्षण ।

जाको जो कारण नहीं, तासों होत जुकाज ।
यह विभावना चतुर्थी, अलंकार को साज ॥१४४॥

उदाहरण ।

येहै गुनि मुनि गन मन में मगन होत वन

वन देखौ अनगनहूँ लसत हैं । और धूत भूत यमदूत जे अपूत छूत देखि कै अभूत ते अकूत झुलसत हैं ॥ दोऊ रीती लखि कहै लेखराज मन मेरे दोऊ कर मोदक औ मोद हुलसत हैं । गंगा तेरी वीची की विचित्रता नभीची अहै देवन की दीपति अदेव विलसत हैं ॥ १४५ ॥

पञ्चम विभावना लक्षण ।

कारण ते कारज जबै, होय विरुद्ध प्रतक्ष ।
पंचम ताहि विभावना, भाषत जे कविदक्ष ॥१४६॥

उदाहरण ।

भाव भये भटभारे भांति भांति भूरि भोड़े नेक नाम सुमिरतहीते डारे भुंजिते । दीरघ दरिद्र दुख गरुये सुमेर सम एक रेनुकनही ते लघु कीन्हे गुंजते ॥ जौन वर विघन सुदरसन ते न कटे तौन नेक दरसनहीते कीन्हे लुंजते । लेखराज तेरे गंगे गुण किमिहेरे जात सीत जलही सों मेरे जारे पाप पुंजते ॥ १४७ ॥

षष्ठम विभावना लक्षण ।

कारण कारज रीति को, कीजै जब बिपरीत ।
षष्टम भेद विभावना, तहँ जानहु कविमीत ॥१४८

उदाहरण ।

कहै लेखराज खगराज जाय आजिज़्जीसों हरिसों कहत बात चुगुली समाजती। हौंतो भयो विकल सकल पापी लादि लादि लेन देत कल न अधिक तर गाजती ॥ कौन परी वान आन निपट मलान मन तजी कुलकान तापै नेकऊ न लाजती। छोह तुव तजि निरमोहता को भजि गंगा तोही ते उपजि नित तोही उपराजती ॥ १४९ ॥

विशेषोक्ति लक्षण ।

पूर्ण हेतुहूँते जहां, कारज प्रगटत नांहि।
विशेषोक्ति भूषण तहां, भाषत कविता मांहि ॥१५०॥

उदाहरण ।

बड़े बड़े पापी द्विजतापी औ सुरापी महा जिन्हें निसिद्यौस यमभीर ही ढुकति है। नरक सिकोरे नाक नाम जिन केरो सुनि हेरेही कलुष कुल कालिमा लुकति है ॥ तिनहिं नेवाज बिन काज लखौ लेखराज कहिये कहां लौं मोमै केतिक उकुति है। दीबो ना रुकत न चुकत कबौ गंगे तोपै जानी मैं न मात केती मुकती मुकुति है ॥ १५१ ॥

असम्भव लक्षण ।

बात असम्भव युक्त जहँ, कारज है वे ठौर ।
असम्भवालंकार सो, जानहु ताहि न और॥ १५२॥

उदाहरण ।

यज्ञ औ योग के योगन के निगमागम के मग- मूड़हि मारतो । सेव के भेव ते देव सो येकऊ देतो न कान कितेक पुकारतो ॥ तीरथ तीरथ तीर थहावत धावत धावत पावन हारतो । एतो बड़ो लेखराज सो पातकी गंगको तारिबे कौन विचारतो ॥ १५३ ॥

१ प्रथम असंगत लक्षण ।

कारण औरहि ठौर जँह, कारज औरहिं ठौर ।
तहां असंगति प्रथम इमि, भाषत कवि शिरमौर १५४

उदाहरण ।

मारग तिहारी मांह चलत निहारी रीति संकट विघन वृन्द लुंज भये वियरे । रेती मे तरनि की तपन तरवान तये तुरत विलोकि कोटि कुल भये सियरे ॥ भये सब दूरि परिपूरि जे रहे ते पाप धूरि से उड़ायगये होत तेरे नियरे । लेखराज गंगाजल

विमल अन्हाय भये सनमुख यमदूत यमसुख पियरे ॥ १५५ ॥

२ द्वितीय असंगत लक्षण ।

अनत करत कोऊ जहां, अनत करन की बात।
तहां असंगत दूसरो, अलंकार विख्यात ॥ १५६ ॥

उदाहरण ।

जोगी जती औ तपी तप के जनमांतर मे जेहि जोवत जापी । और महेश मुनेश विशेष के ध्यान हुँ मे तिनको नहिं व्यापी ॥ सोई लखो लेखराज भगीरथी रीति असंगति की थिर थापी । जोपरि पूरण पुराय न पाइये सो पदवी पर पावत पापी ॥ १५७ ॥

३ तृतीय असंगत लक्षण ।

जौन काज करिबेहुतो, कीन्हो तासु विरुद्ध ।
तृतिय असंगति अलंकृत, भाषतइमिवरबुद्ध॥१५८॥

उदाहरण ।

सगर सुवन आदि सबै सीललाई हेत लागी है जरावन कलुष कुल जैबेको । कहै लेखराज कही जाति न विचित्र गति गुंग ह्वै रहतहौ अगन गुन गैबे

को ॥ गोत्रन उधारिबे को जग मैं प्रकट भई गोत्रन को भेद ना प्रथम कीन्हों ऐवेको। और अभिमान तजि माने जन्हुजा पै आवै ताहि दै विमान जो अमान पद पैवेको ॥ १५६॥

प्रथम विषम लक्षण।

घटना जहँ अनुरूप नहिं, अननुरूप दरसाय।
प्रथम विषम भाषत तहां, अलंकार कविराय॥१६०॥

उदाहरण।

बंद भयो काज यमराज को सकल तापै लागी ही रहत उर संक दिन रात की। लेखराज देवराज कहि न सकत कोऊ मन अनखात रीति लखि उत-पात की ॥ गंगा महरानी तेरी महिमा न जानी जात अकह कहानी है भवानी तुव बातकी ।कहां जहां ब्रह्म केरी पदवी परम पद कहां तहां देखिये पतित महापातकी ॥ १६१॥

द्वितीय विषम लक्षण।

कारण को रँग और अरु, कारज औरै रंग।
दूजो विषम कहैं तहां, पण्डित पाय प्रसंग ॥ १६२॥

उदाहरण।

आप अधगत गति ऊरध की औरै देत आप

अँग कुटिल सरल औरे कीन्हों तैं। आप अंक पंक विन अंक के निशंक औरे आप लेत पाप औरे पूत करि लीन्हों तैं॥ वेद इमि गावै तेरे तट आवै पावै सोई जोई कोई होई भलो बुरो नहिं चीन्हों तैं। लेखराज काज कैसे चूकी चूक मेरी कहा आप गंगे स्वेत मोहिं श्याम करि दीन्हों तैं॥ १६३॥

तृतीय विषम लक्षण।

इष्ट हेतु उद्यम किये, होत अनिष्ट जु काज।
तीजो विषम कहैं तहां, जे अति बुद्धिदराज॥१६४॥

उदाहरण।

देव नदी तट एक दिना लेखराज कहूं खगराज विराजो। वारि में व्याल विलोकि गहो तेहि भच्छिबे को ज्यों मनोरथ साजो॥ छूटत प्रान लखो तहँ अद्भुत कौतुक एक नयो उपराजो। अंग अहीश खगीशके आनन प्रान गोविन्द ह्वै कन्ध पै गाजो१६५॥

सम लक्षण।

दोउन को अनुरूप करि, वर्णन कीजत जत्र।
समको पहिलो भेद कवि, जानि लेहु सब तत्र॥१६६॥

उदाहरण।

जैसो मैंहों पतित अपति तरु सबही मै तैसेही

विशुद्ध है तिहारी रज पावनी । जैसे कलि कालके जंजाल में विहाल में हौं कीरति तिहारी तैसी मिली मनभावनी ॥ विघन वरूथन के जूथन में गूथन हौं तैसेही तिहारी द्युति देखी है जरावनी । लेखराज पापन को प्रवल पहार जैसो तैसेही तिहारी गंगा धार है वहावनी ॥ १६७ ॥

पुनः ।

वेद बतावत गावत आवत पावत हैं सोई वांछित साजा । याकी है टेव यो देव कहैं अवतारिवो छोड़ि न दूसरो काजा ॥ सो अबरावरी देखिबे गंग है सांचु कि झूंठ कहै लेखराजा । तेरो ज्यों नाम है पातकी तारनी मेरो त्यों नाम है पातकी राजा ॥ १६८ ॥

द्वितीय सम लक्षण ।

कारण को गुण ल्याइये, जबै काज ढिंग मित्र ।
अलंकार समको द्वितिय, यों भो भेद पवित्र ॥१६९॥

उदाहरण ।

चित्र औगुप्त की चौकरी चूकी है दूतन के उर मै रिस टीसत । औ यमराज ते आदि दै देवता छंदज देखिके दांतन पीसत ॥ याही विचारि के भागीरथी

लेखराज हूं चित्त दै नित्त असीसत । क्यों नहीं नीचन प्रीति कै तारिये रावरी तौ गति नीचहीं दीसत ॥ १७० ॥

तृतीय समलक्षण ।

जाको कीजै जतन सो, बिन अनिष्ट जँह सिद्ध ।
तीजो सम इमि कहतजे, कबिताई रस विद्ध ॥१७१॥

उदाहरण ।

जाहिर है जस जन्हुजा को जग गावत रेख रहै नहीं शोक की । धारत धूर लहै भर पूरसों संपदा जो सुर राज के ओककी ॥ यों लेखराज प्रसंसत डारि के संक सबै यमराज के थोक की । यों मन औ वच काय कै ध्यावत पावत साहिबी तीनिहुँ लोककी ॥ १७२ ॥

विचित्र लक्षण ।

जो फल चाहिय तासु के, जतन करै विपरीत ।
यों विचित्र भाषत सबै, अलंकार गहिरीत ॥ १७३ ॥

उदाहरण ।

लोक मैं देखौ बिलोकि सबै जलकी नल की गति एकसी कीनी । जे तोई जात अधोगत है गति ते लिये ऊरध की तेहि दीनी ॥ योंही विचारि

कहै लेखराज सुजामें न पीछे परै कहूं हीनी । पावि-
न ऊरध की गति दीबे है याही ते गंग अधोगति
लीनी ॥ १७४ ॥

प्रथम अधिक लक्षण ।

अधिक जहां आधारते, अधिक अधेय लखाय ।
प्रथम अधिक तहँ जानिये, अलंकार मतपाय॥१७५॥

उदाहरण ।

सेत छटाते छटा अधकी सुभ सेतसो आंखिन
वीच फसी रहै। घोर घनी घहराहट की धुनि आनं-
ददान सो कान ठसी रहै ॥ तैसेही दीरघ है रसना
यश गाथ अपार के साथ लसी रहै । एते बड़े मन
मैं लेखराज क्यौं गंगकी धार हजार बसी रहै॥१७६॥

द्वितीय अधिक लक्षण ।

अधिक अधेयहि ते जहां, अधिकाई आधार ।
अधिकाभूषण द्वितिय को, यों कीन्हों निरधार१७७॥

उदाहरण ।

मन्दाकिनी भागीरथी औरऊ अलखनंदा तीनि
लोक व्यापि रहीं जौन जगजानी है । श्रुति औ
सुमृति उपनिषद पुरानन मैं जाकी गाथ सुर मुनि
मानव बखानी है ॥ अगनित पापी तारे एतो बड़ो

रूप धारि यहई विचारि हारे जेते वर ज्ञानी है।
चौदहों भुवन में विहारिनी आगाध तौन गंगा
मैया लेखराज मनमें समानी है ॥१७८॥

अल्प लक्षण ।

अलप अधेयते अल्प करि, दरसावत आधार।
अल्प अलंकृत अलंकृत, रीति करत निरधार ॥१७६॥

उदाहरण ।

जोगमे वा जागमे विरागहूमे रागहूमे त्यागहूमे देखो ना सुभागहू के धन मैं। वेद कहै नेत नेत काहू ना दिखाई देत फैलिरह्यो हेत जाको सेत देव गन मैं ॥ लेखराज ब्रह्मजोई अलख लखो न जात लाखन लखावै लाख लाख जतनन मैं। सोई मै निहारे तनहारे न्यारे न्यारे गंगे फिरत हैं डारे वै तिहारे रेनुकन मैं ॥ १८० ॥

अन्योन्य लक्षण ।

दोऊ दोउन को करैं, उपकार जु गहि रीति।
तहँ अन्योन्य कहैं सबै, कविताई मत चीति॥१८१॥

उदाहरण ।

आठहू जाम सु और न काम है जानै नहीं जग भूंठ औकासत। एकही ध्यान सु आन मनै तेहि

ते कलि की कला नेकु न भासत ॥ ए परिपूरण प्रेम किये रहै वे दुख दीरघ दूरि कै सासत। वै लेखराज के पातक नाशतीं वै गुन गंग के गूढ़ प्रकाशत॥१८२॥

विशेष लक्षण।

जहँ आधार बिना कियो, वर्णन वर आधेय।
प्रथम विशेषाभरण इमि, कविता मैं छविदेय॥१८३॥

उदाहरण।

कुत्सित करम पुंज भूरि कीन्हे दूरि तऊ तेरी धूरि मूरि है सजीव सुख साजे है। कलि कुल कालिमा सकेली है सकल तऊ तेरो जल विमल कमल सम छाजे है ॥ तरुन अविद्या निसि तम तोम तोरो तऊ तेरे यश शशि को प्रकाश राज राजे है। लेखराज दुरित कुदार झारि बारे तऊ गंगा तेरो तेज जोति प्रजुलित गाजे है ॥ १८४ ॥

द्वितीय विशेष लक्षण।

एक वस्तु बहु ठौर कहुँ, जहां वरनिये आनि।
यों विशेष दूजो कहत, लीजे बुधजन जानि॥१८५॥

उदाहरण।

तरु मैं औ तीर मै औ तोय औ तरंगन मै तरकी न जात है तुरत सो निकारी सी। रेत मै औ

खेत में औ सेत में औ हेतहू में देत है दिखाई लेत सब जन्म हारी सी ॥ झाउन के झौरहू में पारावार दौरहू मे गोर हूँ में जलके सुभौर हूं में भारी सी। कहै लेख राज मैं निहारी गंगा सारी ठौर मुकुति विचारी फिरै मारी दई मारी सी ॥ १८६ ॥

तृतीय विशेष लक्षण ।

साधत शक्यहि के कहूं, जहँ अशक्य फुरिजाय ।
तीजो कहत विशेष यों, अलंकार मत पाय ॥१८७॥

उदाहरण ।

ध्यान के धरत रिद्धि सिद्धि सब धाय आवैं ढीलत न धुरता को धोखे हूं तरसकै । एक जल बिन्दु पान कीन्हो जो अजान हूं में तापै सुधा सागर सो रहत बरसकै ॥ धारी जिन रज तापै अज आदि देव सब सजि सजि साज नवै वन्दना सरसकै । लेखराज दरसो सरस आदरस ब्रह्म गंगा तेरो दरसा दरस सो दरसकै ॥ १८८ ॥

१ प्रथम व्याघात लक्षण ।

जहँ हितकारी वस्तु सों, अहित होत लहि जोग ।
प्रथम कहत व्याघात तहँ, अलंकार कवि लोग१८९॥

उदाहरण ।

जाके हित तीनौ देव चित हित दीन्हें रहैं रिद्धि सिद्धि आदि कीन्हे सब सुख छायेते । जाके हित ऋषि मुनि गुन उपदेस वेस करैं फिरैं देश देश चराचर भायेते ॥ जाके हित तारागन शशि सूर जोतिधर करिके प्रकाश को अकाश बीच धायेते । जोई जग सबहीं को हित लेखराज लखौ सोई जग अहित भो गंगा गुण गायेते ॥ १६० ॥

२ द्वितीय व्याघात लक्षण ।

प्रथम विरोधी क्रियाकरि, उचित थापिये काज ।
दूजो सो व्याघातइमि, भाषत सब कविराज ॥१६१॥

उदाहरण ।

वेद पुरान पुराने कहैं सब तारनी तारनी नाम निहारो । ताही की लाज करो जिय आपने बाने की ओर बग़ौर निहारो ॥ हे लेखराज न चाह कछूजिय आपने गंग जू और विचारो । जानती हौ मुँहि पातकी जो तुम पातकी तारनी हौ ज़ुतौ तारौ ॥ १६२॥

कारण माला लक्षण ।

कारण को कारण जहां, मालाकार लखाय ।
कारण माला जानिये, तहां सुकवि समुदाय॥१६३॥

उदाहरण ।

कहै लेखराज सत्य बोलिबे ते शुद्ध जीव शुद्ध जीवहीं सों आसि प्रेम लागो बरसन । प्रेमहीं सों भक्ति शक्ति भक्तिहीं सों सेवा मेवा सेवाहीं सों कृपा जो त्रिलोकि गुरु हरसन ॥ गुरुही सों विद्या गुरु विद्याही सों बुद्धि फुर बुद्धिहीं सों उद्यम सुद्रव्य लागी सरसन । द्रव्य हीने दान मान दान हीते धर्म्म कर्म्म धर्म्म ही सों होत विष्णुपदी पद दरसन ॥ १६४ ॥

एकावली लक्षण ।

गहिंपद छोड़ें फिरि गहै, पंगति सरिस बनाय ।
एकावलि बुधि बरनिकर, ताको कहत उपाय॥१६५॥

उदाहरण ।

चारो ओर जोर जो अथोर सिन्धु राज बसै सिन्धुराजहीं मैं छिति विशद सुबर है । छिति मैं सुदीप दिपै दीप मैं सुखंड मंड खंड मैं सुआवरत गत सरासर है ॥ आवरत ही मैं छत्र छत्र में सुदेस देस देस में नगरता नगर बीच घर है । घर मैं सुजन लेखराज जनहीं मैं मन मन मैं सुगंगा बसै आठहूँ पहर है ॥ १९६ ॥

मालादीपक लक्षण ।

दीपक एकावलि जहां, दोऊ कहिय मिलाय ।
तहँ माला दीपक भयो, अलंकार मैं आय ॥ १३७ ॥

उदाहरण ।

सेत हिमगिरि हिमगिर पै रजत गिरि सेत गिरि रजत पै नन्दी स्वेतता धरी । सेतनन्दी ऊपर विराजै सदा शिव सेत जिन की न उपमा तिलोक मांझ है सरी ॥ सेत शिव ऊपर सुसेतचन्द्र की है कला सेतचन्द्र कला पै सुसेत चन्द्रिका खरी । लेखराज सेत चन्द्रिका पै सेत सुधाझरी सेत सुधाझरी पै सुसेत सुर निर्झरी ॥ १३८ ॥

सार लक्षण ।

एक एकते सरस करि, भाषत बुद्धि उदार ।
कविता के मत सों भयो, अलंकार तहँ सार ॥ १३९ ॥

उदाहरण ।

कुन्दते कमल ताते हिमको अमल गिरि ताहू ते विमल सुरराज वर करि की । ताते छीर छटा पुनि ताहूते शरद घटा ताते हंस जटा ताते कीरति है हरि की ॥ ताते दुति नारद वहूते प्रभा शारद की ताहूते सुपारावार पारद लहरि की । लेखराज

ताते चौर ताते चन्द्र चन्द्रिका औ ताहूते चटक चारु धार सुरसरि की ॥ २०० ॥

यथा संख्या लक्षण ।

वर्णि वस्तु जहँ वर्णिये, फिर क्रम वहै ललाम ।
क्रमिका कोऊ कहत कोऊ, यथा संख्य यह नाम २०१

उदाहरण ।

दीरघ दुरित और दुर्घट दरिद्र दृढ़ दोष दुर मति जेवै आवै न विचार मैं । परसत परसत सरसत सरसत बरसत बरसतही ते होत हार मैं ॥ धाय धाय धसत हैं फांदि फांदि फसत हैं खुद्दि खुहि खंसत हैं खुद ताकी छार मैं । कहै लेखराज ते वे विनहीं विचार लखौ गंगाजू की धार मैं सेवार मैं कगार मैं ॥ २०२ ॥

प्रथम परिजाय लक्षण ।

एक वस्तु को बरनिये, बहु थल लै कछु अर्थ ।
प्रथम भेद परिजायको, अलंकार सुसमर्थ ॥ २०३ ॥

उदाहरण ।

पातक जौन पहार सरूप चढ़े रहते नितही मम सीसे । नामहि ते हरुये से भये निज बोझ सों वै अब अंग न पीसे ॥ मारग तैं लेखराजहि त्यागि

ाये भय पागि देखाय वतीसै । तौन वै पाप अन्हा-
ाहीं गंग के रेनु समानहूं दीठि न दीसै ॥ २०४ ॥

द्वितीय परिजाय लक्षण ।

एक वस्तु मैं जहँ कहूँ, वर्णन करिय अनेक ।
तृतिय भेद परिजाय इमि, कहत सुकवि गहिटेक २०५

उदाहरण ।

खेलत बालपने किये पाप अनेकन ज्वान ह्वै
नारी के काजै । वृद्धता कीन्हे कुटुम्ब के हेत स-
चेत ह्वै पापिन के सिरताजै ॥ भाग अधीन प्रसंग
भोगंग उमंग सो जो अँग अंगन माजै । जो लख-
राज लखौ सुरराज की राज समाज को आज सो
लाजै ॥ २०६ ॥

परिवृत्त लक्षण ।

थोरे दै करि पाइये, बहुत जहां यह रीति ।
अलंकार परिवृत्त तहँ, सकल कहै बिन भीति ॥२०७॥

उदाहरण ।

वेद औ पुरान औ पुराने जन ऋषि मुनि
यहै भयो मतो ठीक सकल समाज को ।
देखिये विचारि कै निहारि कै जगत बीच दूजो
देखि परत देवैया ऐसो आज को ॥ कुटिल कुराही

क्रूर कलही कृतघ्नी सठहठ बस आलसी न केहू कोऊ काज को। तौन लेखराज सुर सरि मैया पदकंज नेक मन दीन्हो लीन्हों राज सुरसाजको२०८

परिसंख्या लक्षण।

वरजि एक थल थापिये, दूजे ठौर जुमित्र।
परि संख्या भूषण सु यों, भाषत परम विचित्र ॥२०९॥

उदाहरण।

काहू बाहु युद्ध को है काहू मति शुद्ध को है काहू नर क्रुद्ध काहू बुद्धकर करी को। काहू को है जोग और जागरन जप काहु काहू को है जज्ञ बरदान बरवरी को॥ काहूको गनेस को है काहू को दिनेस को है काहु पुन्य वेस को है काहू हर हरी को। इनको नदोसों लेखराज कहै तो सों पर मोहिं तौ भरोसो पोसो एक सुरसरीको॥ २१० ॥

विकल्पलक्षण।

दो उन को है वो कठिन कै, यह कै वह होय।
इमि विकल्प लच्छण सुजन, जानिलेहु सब कोय २११

उदाहरण।

एक ही चरन सो धरनि जिन नाप्यो तेऊ सकत न मेरो पापसागर थहाइबो। तेरो तारिबे को बानो

बेद न बखानो मानो सब जग जानो पाप पात सो घहाइबो ॥ अब आनि परी है कठिन कठिनाई भाई कैसे बनै देखो सीलताई औ दहाइबो । कहै लेख-राज गंगे दोऊ कैसे बनै संग मोहिं नाहिं तारिबो औ तारिनी कहाइबो ॥ २१२ ॥

प्रथम समुच्चय लक्षण ।

एकै संग बहु भावको, गुंफ करत जहँ लोग ।
प्रथम समुच्चय कहत इमि, अलंकार के जोग ॥२१३॥

उदाहरण ।

करि झनकार शुभ शैलन प्रचारि दौरि दीरघ विदारिकै सुगुहा धराधर की । कूल औ कछार करे तरुन पछार झार झाउन के झार है न राखी जाति खर की ॥ पूर पारा वार ऊंच नीच ना संभार सूधी टेढ़ी है अपार यों निहार वार बर की । लेखराज तार कीन्हें पाप ना सिहार ऐसे करत बिहार है सु-धार सुरसरि की ॥ २१४ ॥

द्वितीय समुच्चय लक्षण ।

अहं शब्द प्रथमहिं कहै, है सब एक अनेक ।
गहै काज यक द्वितिय सो, समुच्चया मति नेक ॥२१५॥

उदाहरण ।

जन्हु सुता जस जाहिर है जग में जन के मन

को सुख सार है। वेद पुरान पुरानेन सो सुनि कै गुनि कै लेखराज विचार है ॥ छार कछार कगार औ वार मझार की धार औ वार औ पार है। ए सव जुक्त न जुक्ति है या मैं अनुक्त ए उक्त सुमुक्ति को द्वार है ॥ २१६ ॥

कारक दीपक लक्षण।

जहाँ क्रियन को गुम्फ बहु क्रम सों लाइय हेरि।
कारक दीपक कहत तहँ, कविता मत निरवेरि॥२१७॥

उदाहरण।

जौलों देह धरत है करत हैं पापी पाप डरत हैं नाहीं मद मास आदि खाय खाय। ताते तन गरत हैं सरत हैं ररत हैं पापी पानी भरत हैं दिन मुँह बाय बाय ॥ तेऊ तीर परत हैं मरत हैं जरत हैं तरत हैं लेखराज गंगा गुण गाय गाय। तापै फूल झरत हैं अरत हैं सुरी आनि लरत हैं आपुस में वरत हैं धाय धाय ॥ २१८ ॥

समाधि लक्षण।

सो समाधि जहँ काज सिधि, आन हेतु करि होय।
कविता में भूषन सरस, कविता सो कहि सोय॥२१९॥

उदाहरण ।

बालपने न गने निसि द्यौस सुहौस सों ख्याल किये मन भावन। संग सखान कहे उपखान रुग्यान औ ध्यान लियौ कबौ नावन । ज्वान भये रसके चसके बसके तियके कसके रहे दावन । वृद्धता को लखिके लेखराज जो प्रीति भगीरथी की भई पावन ॥ २२० ॥

प्रत्यनीक लक्षण ।

प्रबल विपच्छी पच्छ पर, जहँ प्रतच्छ वर कोप ।
प्रत्यनीक कवि कहतते, जिनहिं काव्य कर चोप २२१॥

उदाहरण ।

एकौ चली न भली सी कोऊ अरुके न मने सकै जो निज नाहते । औ न रहोई परै लेखराज लखौ अब गंगके जो उर दाहते ॥ याहीते पापिन शंकर श्याम की सम्पदा रूप सो देत उमाहते । शैल सुता अरु सूर सुता शुभ सौति सोहागिनि सौतियाडाहते ॥ २२२ ॥

पुनः ।

कच्छि कर कच्छ अच्छ देखत प्रतच्छ कूदो कच्छ मच्छ विकल जुगच्छ कीन्हो सुनिकेत। बाहुन

को झटकि फटकि खल भल कीन्हो मल मल मल जल ही में कीन्हो सरासेत ॥ ऐसे उतपात गात लातन मरदि कीन्हे दीन्हे दुख ऐसे जासों नेक हूँ रहे न चेत । लखो लेखराज बरजोर सों चलो न जोर चोर मुख गंगे ताके पापन बहाये देत ॥ २२३ ॥

काव्यर्थापत्ति अलंकार लक्षण ।

यह जु भयो तो यह कहा, याविधि सिधि करि इष्ट ।
काव्यर्थापत्ति आभरण, यों सब कहत विशिष्ट ॥२२४॥

उदाहरण ।

मुनि मन मगन गगन गति गावत हैं गरुये अगन गुन गन अवदात हैं । वेदन के भेदन को भेदन कि योन जात भेदन बतावैं जे बतावैं जग मात है ॥ शेष से सुरेस से दिनेस से गनेस वेस सुमिरै महेश जे हमेश शुद्ध गात है । पंगति पतित जेती देती सेती तारि गंगे तारिबो सु लेखराज एती केती बात है ॥ २२५ ॥

काव्य लिंग लक्षण ।

अर्थ समर्थ न करत जब, काव्य लिंग तब जानि ।
कवि सब वर्णन करत इमि, पूर्वरीति दृढ़ मानि ॥

उदाहरण ।

भरि जन्म मैं पाप किये हैं इते सम मेरे न

कोऊ चराचर है । नहिं बेद के भेद को भेद लहो हिय हेत न कीन्हों हरीहर है ॥ यमराज सो काज परैगो जबै बचिबेको लखौ न कोऊ थर है। लेखराज क्यों ऊबत डूबत है जग जन्हु सुता तौ कहाडर है ॥ २२७ ॥

१ प्रथम अर्थान्तरन्यास लक्षण ।

कहि विशेष सामान्य पुनि, कविता रंजन युक्ति ।
सो अर्थान्तर न्यास कवि, प्रथम उक्त कर उक्ति ॥

उदाहरण ।

कोल को हाल विलोकि विहाल यों सोक सों चाल तजी सब संग की। भंग की ढंगकी रंगकी रीति सुपीति उहोंकी उतंग उमंग की ॥ छांड़ि दई सब देवकी सेव सु लेव न देव यों भक्ति यकंगकी। जारे तबै लेखराज के पाप कछूबड़ी थाप लखौ नहीं गंगकी ॥ २२६ ॥

२ द्वितीय अर्थान्तर न्यास ।

बड़ो संग लहि कै लघुहु, लहत बड़ाई जौन ।
सो अर्थान्तर न्यास है, दूजो जानौ तौन ॥ २३० ॥

उदाहरण ।

राजन की रमनी कमनी निसि में कुच पै मद

पैन सरै लगीं। प्रेम उमंग सो गंग तरंग मैं अंगन
ते अंगराज़ हरै लगी ॥ नीर को पर्स भयो मद जो
लेखराज त्यों रूप अनूप धरैं लगीं। तेई मृगान की
श्रेणी सुछन्द अनन्द सों नन्दन जाय चरै
लगीं ॥ २३१ ॥

विकस्वर लक्षण।

कहि विशेष सामान्य पुनि, बहुरो कहत विशेष।
अलंकार विकस्वर सबै, भाषत बुद्धि अशेष ॥ २३२॥

उदाहरण।

खाली भई छिति है अमित पात की सों आति
जात ना देखात कोऊ जमपुर मग मैं। सुरमुनि
नाग नर सकल सराहि जाहि वंदत अनंद पाय नाय
शीश पग मैं ॥ कछू बड़ी बात ना लखात लखौ
ताको जाको तेज अवदात प्रात भानु लगा लग मैं।
तारि कै सुलेखराज जन्हु जाई जोति रूप जागि रह्यो
सुजस सुजग मग जग मैं ॥ २३३ ॥

प्रौढ़ोक्ति लक्षण।

बड़े हेतु सैं हेतु जब, कल्पित करिये और।
प्रौढ़ोकति जानहु सुयह, अलंकार करि गौर ॥२३४॥

उदाहरण ।

हिमके कगार बीच छीर सिन्धु धारबीच चन्द्र चन्द्रिका की जोति झलाझल झलकै । रजत के थार बीच पारद मैं शारद की दामिनी की दुति देखौ दौरि दुरि दमकै ॥ कहै लेखराज है तिलोक मैं विलोको और उपमा न पाई तातै गाई नाहीं समकै । सुरसरि मैया हेरी सरस घनेरी तेरी जैसे रज बीच बारि बीच बीचि चमकै ॥ २३५ ॥

सम्भावन लक्षण ।

ऐसो होय तो होय यों, जहां करत कछु तर्क ।
सम्भावन भूषन भनत, सकल कविन के अर्क॥२३६॥

उदाहरण ।

शेष की सहस रसना को करि एक एक निज रसना को करि विधि सो बनाइये। विशद विशारद की शारद की सद बुद्धि सुन्दर सुखद शुद्ध तापर बसाइये ॥ वेश अति माति जो गनेश की हमेश की जो एक देश करि ताको पेश ठहराइये । कहै लेख-राज लाज सहित सुतव तेरे निपट अनेरे गंगे गुन गन गाइये ॥ २३७ ॥

मिथ्याध्यवसित लक्षण ।

झूँठे हित झूठी कहै, राखि अर्थ गति स्वच्छ ।
मिथ्याध्यवसित को सबै, भाषत जे कविदच्छ २३८

उदाहरण ।

कोटिन वर्ष भई नभ में छिति थाह रची दुख-दाई मजो है । चींटी के मूत को सागर के तट बांझ को पूत नजीभ सजो है ॥ तासों सुनी गहिरे बहिरे विन पांय के धाय के मोंहि भजो है । आज कही लखराज सो गाज की गंग ने तारिबो तेरो तजो है ॥ २३६ ॥

ललित लक्षण ।

बिम्ब हेत प्रतिबिम्ब को, कहै सरसता राखि ।
ललित अलंकृत को इविधि, गये सकल कवि भाखि॥

उदाहरण ।

एक रेनुकन ते विघन घन नाश भये अब कहा रही चाह रेनुका वरसकी । कलि के कराल कुल कूलही पै बूड़ि गये अबका जरूर बीर तीर के परस की ॥ पाप पुंज प्रवल पराने पास पेखि पेखि अब विन काम है जुकामना दरस की । लखराज एक बुन्द ही ते मुक्ति गंगा दीन्हीं लालसा अवस अब है जल सरसकी ॥ २४१ ॥

पुनः ।

बालपनो न गनो कछु ख्याल में पेट भरयो औ हँस्यो कबौ रोयो। ज्वानी प्रसंग नये नये ढंग के नारिन के रस रंग विगोयो ॥ आय गयो पन तीसरो पै जल जन्हुजा तू सपने नहिं जोयो । तौ निहचै लेखराज कै तू पट बांधि के दारू द्वारि में सोयो ॥ २४२ ॥

प्रथम प्रहर्षण लक्षण ।

बिना जतन जहँ पाइये, इच्छित फल रुचि रूप ।
प्रथम प्रहर्षण कहत तहँ, सकल कविन के भूप २४३

उदाहरण ।

लेखराज पापी एक चाहि शिव लोक परयो गंग तीर मरयो वा कगारन ते ररकी । छूटतही प्रान दिव्य यान औ विमान धाये लोकपाल चिन्ता करैं निज निज घर की ॥ मैनका घृताची रम्भा काम सेना उरवसी आई धाय धाय के सदाही पाय परकी । हंस खगपति लागे लीबे को लरन तौलौं वैके हाल बैल गैल गही सैल परकी ॥ २४४ ॥

द्वितीय प्रहर्षण लक्षण ।

इच्छितहू ते अधिक फल, मिलै समै अनुसार ।

द्वितिय प्रहर्षण को इविधि, बर्णत बुद्धि उदार २४५

उदाहरण ।

जागरन जाप अनुराग जोग जाग कीन्हे जैसो श्रम भल तैसो कल फल लावहीं । कामधेनु काम तरु चिंतामनि सन देखो जोई मांग्यो सोई पायो सब यों बतावहीं ॥ पञ्चदेव आदि कीन्हे सेव सम सुख सोहै होय नाहीं भेद नित वेद इमि गावहीं । लेखराज गंगा तेरो प्रगट प्रभाव यह सुरपुर मांगे पापी हरिपुर पावहीं ॥ २४६ ॥

तृतीय प्रहर्षण लक्षण ।

जतन करत है जासु हित, सोई पाइय इष्ट ।
तृतिय प्रहर्षण अलंकृत, मधुराइहु ते मिष्ट ॥ २४७ ॥

उदाहरण ।

गंगके नीर को नेम लियो बस जीवका के भयो वास परे हैं। कैयो दिना सुबिना जल के गये पै पन ते नहीं नेक टरे हैं ॥ हेरत राह लखो लेखराज सुलाखनहीं अभिलाष करे हैं । तौलगि धीमर भार भरे जल गंग को धाय कै लाय धरे हैं ॥ २४८ ॥

विषाद लक्षण ।

इच्छित फल के हेतु कृत, होइ जु तासु विरुद्ध ।

नाम विषाद सु अलंकृत, कहत काव्य मत शुद्ध॥२४९॥

उदाहरण।

कोई एक पापी धूत मरो ताहि जमदूत लाये बांधि मजबूत फाँसी ताके गल में। तैसे ही उड़ाय गंग न्हाय कढ़ो काग आय परन सों ताके रेनु कन गिरी तल मैं॥ परसत रेनु ताके सीस गंग धार कढ़ी लेखराज ऐसी वही पुरी जला हल मैं। विकल है यम भागे यमदूत आगे भागे पीछे चित्र गुप्त भागे कागद बगल मैं॥ २५०॥

उल्लास लक्षण।

औरहि के गुण और लहि, दोषहि दोष सु और।
गुण सो दोषरु दोष सों, गुण उल्लास सु ठौर॥२५१॥

गुणते गुण उदाहरण।

जे जनमे सँग पूरुब जन्म के जोर जटे अँग अंग समोये। चण्ड प्रचण्ड अखण्ड उदण्ड जे भेष भयावने जात न जोये॥ जोगते जागते जागरनादिक केतो कियो जप पै नहिं खोये। धन्य है तू लेखराज जो गंग की धार मैं धाय कै पातक धोये॥ २५२॥

दोष ते दोष उदाहरण ।

मात पिता सुत नारि ये झारि विचारि निहारि प्रपञ्च के फन्दै । तू तिन दुःख के दोष दुखी कछु देखौ न ऐसो भयो मतिमन्दै ॥ राति दिना सु बिनाहीं विचार प्रचार करै हित ता छलछन्दै । मोह गथी लेखराज लजौ जस भागीरथी कथी क्यों न अनन्दै ॥ २५३ ॥

गुण ते दोष उदाहरण ।

तेरे चरित्र विचित्र चितै चितै चित्र औ गुप्त चके चित में चिर । देखि दया दुखी दीनन पै दबि दूतहूँ दौरि दुरे हैं दरी गिर ॥ पापन के तन ताप प्रताप ज्वै आपहि आप सुनास भये फिर । ध्यावत गंग लखौ लेखराज के यों समके धमक यम के सिर ॥ २५४ ॥

दोष ते गुण उदाहरण ।

किलकि किलकि कलि कुल कुल कलुषन करत कतल कोप कोऊ कूल दरसै । जमकी जमाति जहां जहां जांचै जोम करि दारु से दवारी से प्रचार झार झरसै ॥ विद्याधर विद्यामान विद्या सबै वेद गावैं तरुन अविद्या की न विद्या काहू

परसै । ज्यौं ज्यौं पाप शेषहूं की राखी नाहीं रेख गंगे त्यौं त्यौं लेखराज के अशेष सुख बरसै ॥२५५॥

अवज्ञा लक्षण ।

गुण सों गुण अरु दोषसों, दोष न लागै जत्र ।
काहूके इमि अवज्ञा, कहत अलंकृत तत्र ॥ २५६॥

१ उदाहरण ।

जन्हुजा को लेखराज कहै जग देख विशेख अलेख प्रभाऊ। और की कौन कहै लहै पातकी जाहि के जैसो रहै चित चाऊ ॥ ताही के संग सदा कै उमंग पै एकऊ अंग गयो न सुभाऊ॥ फूले फले न भले करि कैसे हूँ जैसे के तैसे रहे तुम भाऊ॥ २५७॥

२ उदाहरण ।

कोऊ एक अधम उधारो धूरि धारो तेहि सुनि यमराज धाये देत जो दोहाई है । यह महा पापी द्विज तापी और सुरापी अति कुटिल कलापी देव शापी औ कसाई है॥ कीजिये प्रतीति धीति मानिये हमारी कही होत विपरीति है जो नीति रीति गाई है । लेखराज ताहि सुरसरि मैया सुर पुर दीन्हो है न चीन्हो औ न कीन्ही सुनवाई है ॥ २५८॥

अनुज्ञा लक्षण ।

दोष मांझ गुण मानि कै, करत दोष की चाह ।
कहत अनुज्ञा को सुधी, जे कविता के नाह ॥२५९॥

उदाहरण ।

स्वान औ शृगाल वृक बदन विशाल कोटि करैं लखिलाल बाल कच्छ मच्छ घेरेरी । लहरि हिलोरे जनु झूलत हिंडोरे मांझ पौन झकझोरे घोरे देत चहुँ फेरेरी ॥ लेखराज येहै अभिलाष अभिलाषै तोते गंगाजू न आन अभिलाष मन मेरेरी । काक गृद्ध भीर चाम लेत चीर चीर कब देखिहौं शरीर निज नीर तीर तेरेरी ॥ २६० ॥

लेस लक्षण ।

करत कल्पना दोष मैं, गुण की गुण मैं दोष ।
अलंकार है लेस तहँ, द्वै विधि सों निर्दोष ॥ २६१ ॥

दोष गुण लक्षण ।

धर्म के कर्म करै सब पर्म औ भर्म के भेद परै नहीं कानन । त्यों लेखराज जो नाज को आदि दै साज देवावन है गऊ दानन ॥ बैठि के तीर अधीर है पीर के वीर करै हरि के गुन गानन । धन्य हैं अन्त समै जग में जल गंग को डारत है सबै आनन ॥ २६२ ॥

गुणते दोष ।

रातदिना दरसे बिन चैन न नैन भये तनते प्रतिकूली । खान रु पान को दूरि कै भूरि भई तुव धूरि सजीवन मूली ॥ औ लेखराज लखे कहै लोक के देखौ धौं कैसी भई मति थूली । गंग सनेह अछेह की एह दसा सुधि देहरु गेह की भूली ॥ २६३ ॥

मुद्रा लक्षण ।

प्रस्तुत पद मैं और जहँ, भाखै अर्थ अनूप ।
अलंकार मुद्रा तहां, होत श्लेष अनुरूप ॥ २६४ ॥

उदाहरण ।

परम सुदेस जाकी वरुआ सुसोहनी है देव साखि सुजन कल्यान दान दुनी है । दोऊ कूल ललित सहाने सुघराई लीन्हे पूरियाये तालन की सिरी सब चुनी है ॥ दीप दीप के जे भूप आली चहै छाया जासु शंकरादि देव परवीन जेवै मुनी है । मेघ शब्द छुनी तीनो ग्राम गति सुनी जाकी लेखराज गुनी समगुनी सुरधुनी है ॥ २६५ ॥

रत्नावली लक्षण ।

प्रकृत अर्थ मैं कीजिये, क्रमसों न्यास जु लाय ।
रत्नावलि आभरण की, इविधि रीति दरसाय॥२६६॥

उदाहरण ।

काहू महिपाल लोकपाल दिगपाल काहू काहू हाल ख्याल ही करत जस रस भाथ । काहू को मुनेस औ दिनेस औ महेस काहू काहू पुन्य वेस पाप रोगिन दै रज काथ ॥ लेखराज महिमा महान महि मण्डल में कहिये कहांलौ कल करनी सबै अकाथ । एक गाथ दोय साथ सारदाहि नाथ गावै तीनिपाथ वारी करै चारि हाथ पांच मांथ ॥ २६७ ॥

तद्गुण लक्षण ।

अपनो गुण तजि संगको, लेइ जु सुखमा हेतु ।
अलंकार तद्गुण तहां, लेखराज कहिदेत ॥ २६८ ॥

उदाहरण ।

शुद्ध भई वर बुद्धि सुचित्त की क्रूरता क्रूर सुभूर रढ़ै लगी । ताप त्रई की गई गरमी सुभ सीतलताई नई सो चढ़ै लगी ॥ यों लेखराज सो गंग के नीर में धोवत अंग में जोति मढ़ै लगी । श्यामता पाप पलट्टि कै स्वेतता कीरति रूप अनूप बढ़ै लगी ॥ २६९ ॥

प्रथम पूर्वरूप लक्षण ।

संगति सों गुण आपनो, गयो जु पावै फेरि ।

पूर्व रूप पहिलो तहां, कहत काव्य मत हेरि ॥२७०

उदाहरण ।

ब्रह्म सों छूटि कै जीव भयो जनमें जग में जस ज्योत उदोत है । ज्वान भये गुनवान भये सुतवान भये भयो भूरि सु गोत है । बूढ़े भये अँग रूढ़े भये मतिमूढ़े भये परे तातहि रोत है । वे लेखराज सु गंग में आय कै न्हाय कै जाय कै ब्रह्म ही होत है ॥ २७१ ॥

द्वितीय पूर्वरूप लक्षण ।

जहां मिटाये हू कहूँ, पूरव रूप मिटै न ।
पूर्व रूप दूजो तहां, अलंकार सुख दैन ॥२७२॥

उदाहरण ।

दूरि किये कलि के कुल रोगन धूरि तो भूरि सजीवन कंद है । पापन नासि किये निसि सें पै तऊ जस चन्द की जोति दुचंद है ॥ गंगा तिहारी कहां लौं करै महिमा लेखराज महा मति मंद है । तारि दिये जग पातकी भारि पै तारिबो को तेरे तार न बंद है ॥ २७३ ॥

अतद्गुण लक्षण ।

निज गुण मैं जहँ लगत नहिं, संगति गुण अतिभार ।

कहत अर्थ गति में तहां, अतद्गुणालंकार ॥२७४॥

उदाहरण ।

अखिल जगत ईश लखौ जेहि सीस नावै लाख अभिलाष सों करत जेहि लालिमा । आठौ सिद्धि नवौ निद्धि सुख सरसायो पायो सब मन भायो जिमि सुरतरु डालिमा ॥ पाप रुज दूरि करै पुन्य जस पूर करै तेई गुन भूरि जे सजीवमूरि आलिमा। लेखराज गंग रज धारे लहै कलकला कलि में रहत पै न लागै कलि कालिमा ॥२७५॥

अनगुन लक्षण ।

संगति ते गुण बढ़त है, ऐसो करत बखान ।
अनगुन भूषण को सुयों, लीजै बुधजन जान ॥२७६

उदाहरण ।

पातक छोड़ि सु और न काम निकाम के दामन को मगुहेरो । काम औ क्रोध महा मद आदि दै याही विषै को बनो रह्यो चेरो ॥ ऐसे कुसंग को संग कै गंग उमंग सों लै जल में गहि गेरो । ता लेख-राज के तारिबे के यशते यश दूगुनो ह्वै गयो तेरो २७७

मीलितलक्षण ।

जहां सदृशता मैं कछू, भेदन भासित होय ।

अलंकार मीलित तहां, जानि लेहु कविलोय ॥२७८

उदाहरण ।

कोऊ मरो एक पातकी गेल में जानिये काहु तो जात न चीन्हो। ताहि चले जमके गन लेन को देन को दंड सुदंडहि लीन्हो ॥ तौलगि गंग बयारि लगी लेखराज चुनौती जमै तब दीन्हो । चीन्हो न ताहि रहे मुहवाय ते जाय यों वेश महेश को कीन्हो ॥ २७९ ॥

सामान्य लक्षण ।

जंह द्वै वस्तु समान में, भेद न परत लखाय।
अलंकार सामन्य तहँ, दीन्हो कविन बताय ॥२८०॥

उदाहरण ।

पातकी एक मरो तट गंग के पाई सोई गति जो मन मानीं। धाय कै विष्णु चढ़ाय खगेश पै बेगि ही ताहि सुधामहि आनीं । त्यों लेखराज सुलेन तिन्हे निकसी अति आतुर हीं हरषानीं । देखि द्वै रूप तहां हरिके तिन्हे हेरत मे रमा आपु हेरानीं ॥ २८१ ॥

उन्मीलित लक्षण ।

मीलित में कछु भेद जहँ, प्रगट परत पहिचानि ।

उनमीलित भूषण तहां, कविमत लीजै जानि ॥२८२

उदाहरण ।

चैत के पूरन चन्द की चांदनी फैलि रही अति ही सरसानी । तामें रही मिलि एक सुजोति है दूसरी नेक परै नहीं जानी ॥ ढूंढ़त ढूंढ़त हारि परे जे कहावत हैं सुविचच्छन ज्ञानीं। गंग लखौ लेखराज सुबेर में लोलता ते लहरी ते लखानीं ॥ २८३ ॥

वैशेषक लक्षण ।

द्वै वस्तुन सामान्य मैं, कछू हेत से भेद ।
तहां विशेषक कहत कवि, निज मति सो बिनखेद ॥

उदाहरण ।

नाक औ कानन आंखि औ आनन पावन धावन वैसेई ठाने। पीठि औ दीठि सुमाथ औ हाथ हूं बोल कपोल सु एक से माने ॥ बाल औ गाल समानहिं हैं दोऊ भिन्न कै कोऊ न जाहिं बखाने। पै लेखराज सु पापी पुनीतऊ गंग की भक्ति में जात हैं जाने ॥ २८५ ॥

गूढ़ोत्तर लक्षण।

अभिप्राय के सहित जहँ, उत्तर कोऊ देत ।
गूढ़ोत्तर तासों कहत, जिनहिं काव्य सों हेत ॥२८६॥

उदाहरण ।

डारहि डार सु पातहि पात देखात न भाऊ के भारन घेरो । औँकन काकन कांकर रेत के होय सचेत सबै उलभेरो ॥ यों लेखराज कगारन खोदि कै वार औ पार में जाय के हेरो । पापरे गंग के तीर हेराने सबै मिलि बीर चलौ चालि हेरो ॥ २८७ ॥

चित्र लक्षण ।

प्रश्नहिं में उत्तरहु को, होत जहां शुचि अर्थ ।
चित्र अलंकृत नाम तहँ, भाषत सुकवि समर्थ ॥२८८॥

उदाहरण ।

तेरे तरुतट वासी पतँग समान हेरो लेखराज सकल विचार कर करि के । तेरे तटही के हर घर कैसे घर कहै तेरे जल चर सम हेरे थर थरि के । तेरे तीर २ के सहर पुर कैसे वास तेरो तोय शुद्ध है समान शुद्ध भरि के । तट वासी नारिन की सीस मान वर कहै तट वासी नर कहै वर सुरसरि के २८९

सूक्ष्म लक्षण ।

संज्ञा ही ते जानिये, जहां पराई बात ।
तहँ सूछम भूषन सकल, कहत सुकवि अवदात २९०

उदाहरण ।

तोर तिहारे निहार में आजु सुजा लेखराज वे नाक विहारे। हारे यमादि रहे मुहँ वाय तिन्हें सुरी धाय करें यों इसारे ॥ सोर मनोरथ ह्वैहैं कहे निज धन्य गनै इन्हे गंग उधारे । धारेही आरसी ताहि देखाय औ नील लै पंकज प्राय उतारे ॥ २९१ ॥

पिहित लक्षण ।

पर वृत्तान्तहि हेरि के, तासन करिये इंग्ञ ।
पिहित बखानत हैं तहां, अलंकार युत विज्ञ ॥२९२॥

उदाहरण ।

पापी प्रचंड उदंड महा यक जाके सुपाप की नाप न पावैं । तीर मरो तेहि तारिदियो रहे लाज सबै लेखराज यों गावैं ॥ ताते भयो श्रम आनन लाल पै सीकर के कनका छवि छावैं । बोलि सके भयते नहिं गंग को आरसी लै यमराज देखावैं ॥ २९३ ॥

व्याजोक्ति लक्षण ।

कछू व्याज करिकै जबहिं, करत काव्य में उक्ति ।
अलंकार लेखराजसो, सकल कहत व्याजुक्ति॥२९४॥

उदाहरण ।

गंग चरित्र विचित्र चितै चितै चित्र औगुप्त दुरे

दरी गूढ़े । और लखौ लेखराज कहूँ यमराज के दूत मिले नहीं ढूँढ़े ॥ कम्पत ही निसिद्यौस रहैं यम ऐसे कछु अँग के भये रूढ़े । पूंछे सबै सुरके कहैं रूठे है छूँठे वको न भये अब बूढ़े ॥ २६५ ॥

गूढ़ोक्ति लक्षण ।

गूढ़ करत है उक्ति में, औरहि प्रति कोऊ और ।
और सुनहि यह जानि है, गूढ़ उक्ति तेहि ठौर ॥२६६॥

उदाहरण ।

तरल तरंगिनी तिहारो तारो लेखराज राजन विमान सुरराज आदि टीको है। कोऊ लीन्हे चमर अमर बधू छत्र कोऊ कोऊ पानदान पीकदान कोऊ ठीको है ॥ तिनही सची सखा सखी चतुराई चारु कहत सुनाय ताको हेरि हित नीको है। पान को सुराहै सुधागान अप्सरा है कंद नंदन अराम वाससुर पुर नीको है ॥ २६७ ॥

विवृतोक्ति लक्षण ।

छिप्यो अर्थ प्रगटित करै, करि के श्लेष विशेष ।
विवृतोक्ति ते कहत जे, कविताई के शेष ॥ २९८॥

उदाहरण ।

सीतल है दरस परस जाको सुखखानि दीपति

है दीपति अपार जाकी पसरी । अंबर अमल अंग वासकी तरंग रंग रंग के दुकूल सोहै अमित सुजसरी ॥ मुनि मन मोहत है छोहत है सो तिनको जोहत है जोई ताहि करत विवसरी । लेखराज आय यार मेटिये विषम भार कीजिये विहार वाम अरी है सुरसरी ॥ २९९ ॥

युक्ति लक्षण ।

अपनो मरम छपावई, कछू क्रिया करि आप ।
युक्ति ताहि कवि कहत हैं, जिनको विमल प्रताप ॥

उदाहरण ।

पापी मरो तटगंग के एक लखौ लेखराज विमानन मांहीं । धाई सबै सुर वाम सकाम सु चाहना तासु किये तेहि पाहीं ॥ तामें रमा तेहि प्रीति जनैबे को जुक्ति करी सुलखी केहु नाहीं । भानु दै पीठि सुसीस की डीठ छपाय कै पांय छुवाय कै छांहीं ॥ ३०१ ॥

लोकोक्ति लक्षण ।

लोक कहावति लावई, काव्य मध्य जब कोउ ।
अलंकार लोकोक्ति तब, जानि लेहु है सोउ ॥३०२॥

उदाहरण ।

जज्ञ जोग दानन ते कथा औ पुरानन ते निगम निदानन ते जौन वर गाई है। ब्रह्म विष्णु देवन ते सुचित ह्वै सेवन ते भूरि भक्ति भेवन ते भूलिहूँ न पाई है॥ पुन्य के कथन ते जुदिव्य तीरथन ते जु ब्रह्म के कथन ते अधिक कठिनाई है। लेखराज भाई है सदाई समुदाई मुनि तौन तै मुकुति गंगे गलिन वहाई है॥ ३०३॥

छेकोक्ति लक्षण ।

आन अर्थ अंतरित करि, लोक उक्ति कहि देय।
अलंकार छेकोक्ति तहँ, जानि सुकवि जन लेय॥३०४

उदाहरण ।

हरि हलि लालन सुगालन सुधारि हारे विधि क़ैद कठिन कमण्डल की दई है। हर कसि जटन लटन फटकारि मारि जन्हु जोय जुलमी जियत लीलि लई है॥ जब चीरि काढ़ी तऊ बाढ़ी है अधिक गाढ़ी संग दोष ऐसो सांची लोक निर्मई है। लेख-राज ऐसे कुटिलन तारि कीन्हो संग याहीते सुगंगा दृढ़ लई कुटिलई है॥ ३०५॥

पुनः ।

सांप के पायन को लहै सांप औ गूंगे की सान को गूंगोई गानै । औ खग भाषा के बूझिबे को खग बूझत है सब लोग बखानै ॥ ताहि कहौ लेखराज कहै किमि जानि कै कैसे बनै जो अजानै । सारद नारद गाय सकै नहिं गंग प्रभाव को गंगही जानै ॥ ३०६ ॥

वक्रोक्ति लक्षण ।

सीधे पद को श्लेष कै, काकु सो औरै अर्थ ।
करै ताहि वक्रोक्ति कहि, बरणत सुकवि समर्थ ॥३०७

उदाहरण ।

केहूँ बिसानी नहीं जब जानी सु मानी नहीं मन ठानी ए लीला । देखौ ये पातकि आवत जन्हुजा पातकि आवत पर्म सुशीला ॥ यों प्रति उत्तर गाजि दियो यमराज को लाज भयो मन ढीला । तारि दियो लेखराज भलो चलो नेक नहीं उनको जलो गीला ॥३०८॥

काकोक्ति लक्षण ।

काकु करिय पद अर्थ मैं, का यह वर्णहि आनि ।
अर्थ और है जाय सो, काकोकति पहिंचानि ॥३०९॥

उदाहरण ।

सारद नारद शेष विसारद गावत है गुण जासु पुकारि है । वेद पुरान पुराने सबै जन जानि सके न रहे मति हारि है ॥ जासु है बानो बखानो यहै अरु जानो न जानि सके न निहारि है । तारे सबै सगरात्मज गंग जे आजु सु का लेखराज न तारिहै ॥३१०॥

स्वभावोक्ति लक्षण ।

जाति स्वभावहि वरणियत, तदनुसार करि उक्ति ।
स्वभावोक्ति तासों कहत, यामें कछू न जुक्ति ॥३११॥

उदाहरण ।

कहूँ है सुधाई कहूँ वक्रता को पाई कहूँ चलत है धाई कहूँ आय जाय ठहरी । कहूँ तल भूतल है कहूँ चढ़ी ऊपल है कहूँ अति ऊथल है कहूँ अति गहरी ॥ कहै लेखराज यों बिराजि रही गंगा आजु छाई चहुँ ओरन सों छबि छटा छहरी । कुल्ल कूल तूर कल कोलाहल पूर भूर करत कलोल है बिलोल लोल लहरी ॥३१२॥

भाविक लक्षण ।

होनहार अरु भूत को, करि प्रत्यक्ष दिखाय ।

अलंकार भाविक तहां, बर्णत कवि समुदाय ॥३१३॥

उदाहरण ।

रंग की औ शुभ सीतललाई की औ बिमलाई की हेरि उतंग की । तंग की है यम की सभा यों जड़सी है रही है पिये जनु भंग की ॥ भंग की है गति लोभरु मोह की क्रोध की औ मदही की अनंग की । अंग की है लेखराज नहीं सुधि है बुधि भांवती गंग तरंग की ॥३१४॥

उदात्त अलंकार लक्षण ।

सम्पति और महत्व को, बिभव कहै जहँ कोय ।
तहँ उदात्त के भेदवर, भाषत है कवि दोय ॥३१५॥

प्रथम उदात्त उदाहरण ।

धाई धरा धरते धुकार कै धधकि धार धरा मध्य धूम धाम धामन मचै लगी । कलि कुल विकल सकल खलभल परी पल पल प्रवल तरनि ते तचै लगी ॥ विघन सघन हन छन २ मुनि मन मगन गगन गन नाकती नचै लगी । लेखराज पापिन को सुर सरि हर हरि हेरि हेरि हरखि हजारन रचै लगी ॥ ३१६ ॥

द्वितीय उदात्त उदाहरण ।

चिंतामनि मंदिर के मंदर मकर कृत रतन सिंहासन पै पद्मासन गाजै है । आभरन वसन है सेत हीरा मोती युत चपला जोन्हाई समताई बीच लाजै है ॥ तीनि दृग चारि कर कंज कुम्भ अभय वर तीनि देव चारि वेद असतुति साजै है। लेखराज धन्य यह ध्यान धरो सुर धुनि भाल वि धुबाल व्याल जटा जूट राजै है ॥ ३१७ ॥

अत्युक्ति लक्षण ।

झूंठ उदाररु सूरता, को करि विभव बनाव ।
अलंकार अत्युक्तिसो, कवि वरनत करि चाव॥३१८॥

उदाहरण ।

रात दिना लेखराज विनै करि अन्तर बाहेर हूँ त्यहि ध्यावै । है जननी जग जन्हु सुता जल तेरे को तेज अपूरुब गावै ॥ काक उलूक की छांह कहूँ जेहि छ्वै निकसै इमि तेज बढ़ावै । जे वृष चण्ड के दण्ड प्रचण्ड उदण्ड लखे जेहि आंखि चोरावै ॥ ३१९ ॥

निरुक्ति लक्षण ।

नाम जोग तें और जहँ, पलटि अर्थ करि भाखि ।

सो निरुक्ति कहि भाखहीं, कविजन जिय रुचिराखि ॥

उदाहरण ।

शिव शीस गत अति उच्च परनत मति नित प्रति अधगति ही सों रत राची हो । अछत सुसुत हति त्याग्यो है सुमति पति सगर सुवन हेत देस देस नाची हो ॥ पातकिन हेत देखौ पदवी परम पद सूर सुत साधुको तरनि हीं सो ताची हो । कहै लेखराज कछु कहि ना सकत पर देखिये विचारि तौ विवुध नदी सांची हो ॥ ३२१ ॥

पुनः ।

कोरि करि कष्ट धृष्टताई सो कहाई नष्ट जोरो वहुतेरो करि मनसिक आरती । प्रानन ते प्यारो कीन्हो कबहूँ न न्यारो भाई जाकी वृद्धताई जो सदाई मति धारती ॥ ताहि विन काज कहा कीजिये इलाज अब कीन्हो है पुकार वहु नेक न निहारती । कहै लेखराज तेरो नाम निरजर नदी आपतन हेरो मेरो कलुष क्यों जारती ॥ ३२२ ॥

प्रतिषेध लक्षण ।

करि निषेध जहँ प्रगट अनु, कथन करत कविलोग ।
तहँ प्रति षेधाभरण को, आनिहोत संजोग ॥ ३२३ ॥

उदाहरण ।

बांधो हढ़ केस काटि सुपट सुदेस वेस होयगो कलेस फेरि वेसको सुधारिबो । त्यागो वर आसन सिंगासन अवासन को सांसनमिलैगो सीस चौर-छत्र धारिबो ॥ छोड़ि करि बाहन उपाहन पगन्हूँ लैं चाहन उमाहन के सुकृत संभारिबो । कहै लेखराज गंगे बड़ो है बखेड़ो बेड़ो और पापी केरो सोन हेरो मेरो तारिबो ॥ ३२४ ॥

विधि लक्षण ।

सिद्धि वस्तु को काव्य करि, प्रगट करै जहँ गान ।
तहां कहत विधि अलंकृत, अलंकृती सज्ञान॥३२५॥

उदाहरण ।

यों मन औ वच काय मनाय के गाय रह्यो सगरात्मज गोतहै । उज्जल जोति जगै जस तेरे की या जगमें जनको सुधा सोत है ॥ तीनिहूँ वेद औ तीनिहूँ देव कहैं तिहुँ काल तिलोक उदोत है । तारिबे के समै जो लेखराज के जन्हुजा तारनी तारनी होत है ॥ ३२६ ॥

प्रथम हेतु लक्षण ।

कारण कारज साथ करि, वरणन करत प्रतच्छ ।

प्रथम हेतु तहँ कहतकवि, जे कविता मतदच्छ॥३२७॥

उदाहरण ।

जो शिव शीस न धारते हेत सों तौ किमि यों अघ दावन होते। जो न कमण्डल में करते विधि तौ जग में इमि नाव न होते ॥ सेवते जो न भगीरथ यों लेखराज न यों गुनगावन होते। जो करते मन भावन गंग न तौ किमि बावन पावन होते ॥३२८॥

द्वितीय हेतु लक्षण ।

कारण कारज एक करि, वर्णन करत जु कोय।
दूजो हेतु तहां सुनौ, अलंकार में होय ॥ ३२९ ॥

उदाहरण ।

दूसरे काहू की आस न राखत भाषत सत्य न उक्कजी की। और जिते जग के व्यवहार हैं पूजी तिती मन कामना जी की ॥ स्वारथ औ पर मार्थ पदारथ आनि मिले जे वै दूरि नजीकी। हैं लेखराज के पूरे सबै सुख कारि कटाक्ष्येक जन्हुजा जी की ॥३३०॥

इत्यर्थालंकार समाप्तम्

———:०:———

शब्दालंकार।

—— ।※। ——

छेकानुप्रास लक्षण ।

द्वै द्वै वर्णन की जहां, आवृति छेका सोय ।
छेक विहँग भाषा यथा, तथा कहत सब कोय ॥३३१॥

उदाहरण ।

प्रेम की पोढ़ी गुनै गथि कै पलरा विविज्ञान विराग बनाई । मुक्ति की मूठि शिखा सु भले अरु भूमि सु भक्ति की डांड़ी सोहाई ॥ तौलिबे को तक्यो है लेखराज लखे सब जामे मिटै दुचिताई । छोनि छई गरुवाई सुगग रु स्वर्ग सुधा गयो लै लघुताई ॥३३२॥

वृत्तानुप्रास लक्षण ।

आवृति लावै वर्ण की, अंत मध्य कै आदि ।
सो वृत्तानुप्रास है, शब्दान्तर न अनादि ॥३३३॥

उदाहरण ।

परी गाज बाज दरवाज जमराज आज सिरी साज लाज त्याज भाज गई गद्दी की । जेती जग रीती जोई जोर औ जुलुम बारी जरी जाव जावै

जाती जमदूत जद्दी की ॥ लेखराज खूटी वही ह्वाइति कलम टूटी बूटी मति जूटी चित्रगुप्त मुत सद्दी की । पाप-पत्र रद्दी की महानी मुक्ति मद्दी की सु फैली चहुँ हद्दी की दोहाई सुरनद्दी की ॥३३४॥

पुनः ।

मातु पितु संगा सुत सोदर उछंगा वर नारि रसरंगा आदि राख्यो है न वियो तैं । जम जाल भंगा जमदूतन सों दंगा बरजोरि जुर जंगा करि मारि छीनि लियो तैं ॥ लेखराज मंगा मुक्ति आपने ही फंगा कियो अमित उमंगा ताहि चंगा तौन कियो तैं । एरी मेरी गंगा यह कौन तेरो ढंगा अंग अंग में भुजंगा बांधि नंगा करि दियो तैं ॥३३५॥

पुनः ।

एक ओर देवता विमानन की रेल ठेल एक ओर देव वधू वरिवे को ठहरी । एक ओर हंग खग-पति बैल बेगधंत वारक विलोकि ब्रह्महूँ की मति हहरी ॥ लेखराज ताके हौं कहांलो कहौं भूरि भाग जात लोक लोकन लौ फैलि फवि फहरी । पुन्य की पताकी ताकी जाति है न ताकी केहूं सगर सुताकी जिन ताकी नेक लहरी ॥ ३३६ ॥

लाटानुप्रास लक्षण ।

वही शब्द अर्थहु वही, भाव और है जाय ।
सो लाटानुप्रास है, कहत काव्य मत पाय ॥ ३३७ ॥

उदाहरण ।

न्हाये अरु धोयेते न होति सिद्धि वृद्धि कछू न्हाये अरु धोये मिटै अंग की कुवासाहै । पूजा अरु पाठते न पैबे मुक्ति ठाठ-बाट पूजा अरु पाठ एक जग को तमासा है ॥ कहै लेखराज चित्त बीच मैं विचारि देखौ कहत पुकारि यह बात तो रे भासाहै । जाउर न प्रीति ताको गंगा कर्म नासा अरु जाउर न प्रीति ताको गंगा कर्म नासा है ॥ ३३८ ॥

पुनः ।

तेरो करि सुमिरन सुमरन ते रहत तेरो गुन गावत अगुन गुन गैबे को । तेरो ध्यान राखत न राखत है ध्यान और तेरी सतरज धारे सतरज जैबे को ॥ तेरो जो समीप ताके ब्रह्म जो समीप ताके तेरो यश लेखराज लेख छिति छैबे को । तेरे नीर तीर सुरसरि सुरसरि हेत तजत शरीर है शरीर दिव्य पैबे को ॥ ३३९ ॥

जमकानुप्रास लक्षण ।

फिरि फिरि पद वेई जहां, अर्थ औरई होत ।
सो जमकानुप्रास है, भाषत कवि गुरु गोत ॥ ३४० ॥

उदाहरण ।

लेखराज चालै गंग चारु ताकी चरचा को चख चंचलाई इव चखन चंचलाई है । सुकल कलाई है जी सुकल कलाई है यों अकल कलाई है जोई कल कलाई है ॥ सुरी कोमलाई है सुमुंह कोमलाई है सुअंग कोमलाई है सुहोत कोमलाई है । पदम ललाई है सुपदम ललाई है सुपदम ललाई है सुपदम ललाई है ॥ ३४१ ॥

पुनः ।

जीव सम पसरी सुता की मोह पसरी को तोरि के तपसरी समान छिनि पसरी । लेखराज जसरी कहैगो तो सु जसरी न शेष सकैं कहि है सुजसरी सुजसरी ॥ जाको है दरसरी सुधा हूँ सो सरसरी है देत मन वांछित सरसरी सरसरी । पाप की सुर सरी को काटि दे सुरसरी यों पापी के सुरसरी विराजै है सुरसरी ॥ ३४२ ॥

श्रुत्यानुप्रास लक्षण ।

पंच वर्ग को क्रमहिं सो, कीजत है नुप्रास ।

सो श्रुत्यानुप्रास को, पंडित करत प्रकास ॥३४३॥

उदाहरण।

कारे कलुषन छूत, खारे मूत से अकूत, गारे अघ निपट, उघारे, चारे जानै धूत। छारे कहूँ गंग लहि जारे, झारे, टारे, ठारे, ढारे हीं सुडारे दोष ढारे तेज ह्वै कै पूत ॥ लेखराज तारे, थारे, हेरि, देव हारे हीय धारे त्याहिं नारे करै न्यारे छिन पाय नूत। पारे तिन जमतंत्र फारे चित्रगुप्त पत्र बारे पाय कै यकत्र भारे मारे जमदूत ॥ ३४४ ॥

षोड़शानुप्रास उदाहरण।

रात दिन ग्राम बीच कलित अरामता मैं करत अराम परे खरे जे बेराम से। मत्त आठो जाम रंग रंगे रंग धाम हिय हर्ष बिसराम संग सने सुख बाम के॥ हेरि कोटि छाम अंग अंगन ललाम करैं कोक के कलाम और काम रति काम से। तेऊ तेरो नाम गंग लेत बिन काम तिन्है करत सलाम सुर सकल गुलाम से ॥ ३४५ ॥

इत्यनुप्रासः।

चित्रकाव्य ।

सासनोत्तर लक्षण ।

तीनि प्रश्न को एकई, उत्तर दीजत जत्र ।
सासनोत्तर चित्र है, भाषत कवि वर तत्र ॥ ३४६ ॥

उदाहरण ।

एकन कही यों हमैं माधुरी विविधि विधि करि कै खवावो जामैं होय तो सुअसरी । एकन कही यों हमैं कूपोदकता जो प्यावो लागी है पिपास जासों नेक है न बसरी ॥ एकन कही यों हमैं मज्जन कराओ वेगि जासों टूटि जाय गल मोह की सुपसरी । लेखराज सबन सराहिदियो उत्तर यों लेहु मनभानो विद्यमान है सुरसरी ॥ ३४७ ॥

कमलवत्प्रश्नोत्तर लक्षण ।

क्रम करि उत्तर वर्ण को, आदि जोरिये अंत ।
कमलोत्प्रश्नोत्तर तहां, जानि लेहु कविसंत ॥३४८॥

उदाहरण ।

कहा नृप गुनिन को हेरि गुन करत हैं कापै तपी साधत हैं सीत घाम बैठि बन । वेद औ पुरान कहा किये फल भल होत हरखत कहा हैं

विलोकि धीर वीरजन ॥ काहि नाहि सज्जन ववत औ डेरात काहि काहि अति दामिनि सो चंचल सुकवि मन । लेखराज काहि कासे राखत है आठो जाम सबको है उत्तर सुमति सुरसरि मन ॥ ३४८ ॥

श्रृंखलोत्तर लक्षण ।

एक एक तजि वर्ण जहँ, चलै गतागत चित्र ।
श्रृंखलोत्तर ताहिको, भाषत सुकवि पवित्र ॥३५०॥

उदाहरण ।

कौन कहै अक्षर सुधर ताको वाचक है देव नाम दूजो कहा कहैं सब मिलि करि । भाव को सहायक कहत कवि काहि कहा मोतिन की लरको कहत कहौ ध्यान धरि ॥ कहा क्रोध भये उपजत है विचारि कहौ कहा काम आयुध वियोगी जासों जात जरि । कहा मूल माधुरी को जग मैं प्रसिद्ध देखौ लेखराज राखत हिये मैं कहा सुरसरि ॥ ३५१ ॥

व्यस्त समस्त लक्षण ।

एक एक वर्ण बढ़ाइये, अंत वर्ण लो जत्र ।
व्यस्त समस्त सुचित्र यह, जानि लेहु कवि तत्र ॥

उदाहरण ।

कहा हरि प्रिया सो कहत कहौ हेरि सोई कौन प्रतिपालै बालापन सो जु मया करि । परम कपूत और सुजसी सपूत दोऊ कौन के समान ही रहत सदा एक दरि ॥ अदिति सी कहा कहै कहिये बिचारि सोई कासों न उरिन होत मानुष सु तन धरि । लेखराज मन वच कर्म करि आठौ जाम सेवत कहा है सोई कहौ मातु सुरसरि ॥ ३५३ ॥

अंतादिवर्ण प्रश्नोत्तर लक्षण ।

आदि अंत के वर्ण को, गहि त्यागै गहि रीति ।
प्रश्नोत्तर अंतादि सो, भाषत सुकवि सप्रीति॥३५४॥

उदाहरण ।

कहा करै रूसि तिय कहा शसि सूर दोऊ उदै है कै करत हैं नास ताको जानै जन । कहा देव नारिन सौं कहिये कहौ सो ठीक को है मूल कविताई कहत सु कवि मन ॥ कहा काम अन्न क्रोध भये कहा होत कहैं आपनी उपासना सों सबै कहा धरि पन । लछिमी न होय ताको कहा कहैं कहौं सोई लेखराज राखै कहा मातु सुरसरि मन ॥ ३५५ ॥

एकाक्षर चित्र ।

गंगी गोगो गो गगे, गुंगी गो गो गुंग ।
गंगा गंगे गंग गा, गंगा गंगे गंग ॥ ३५६ ॥

श्री गंगा स्तुति ।

दोसहुं तोहिं औ कोसहुं तोहिं औ रोसहुं तोहीं सो कै मन ताता । गावहुं तोहिं औ ध्यावहुं तोहिं औ पावहुं तोहिं सो मैं सुख साता ॥ सोई विचारि छमौ लेखराज की चूक सबै अब जन्हु की जाता । पूत कपूत लखे जग कोटिन पै न लखी सुनी कैंहू कु माता ॥ ३५७ ॥

दोहा ।

गंगेशानन गंग मग, निधि दीन्हे शसि गंग ।
गंगा गति गनि अंककी, संवत लिखहु सुढंग ॥ ३५८ ॥
मास पच्छ तिथि बार गुरु, कै उमंग कहि गंग ।
गंगा गंगाभरण को, जन्म भयो एक संग ॥ ३५९ ॥

समाप्तोयं ग्रन्थः